UPHIN-11403

RNI - 43357/85

डाक पंजी. क्र.: S-S-P-/LW/NP-188/2021-2023

शिशु मन्दिर सन्देश

सरस्वती शिशु मन्दिर / विद्या मन्दिर / बालिका विद्या मन्दिर तथा पूर्व छात्रों की मासिक पत्रिका

वर्ष - 40 | अंक - 07 | युगाब्द - 5125 | विक्रम संवत् - 2080 | मार्च - 2024

मूल्यः 12

सम्पादकीय कार्यालय

शिशु मन्दिर संदेश

केशव कृपा, सरस्वती कुञ्ज
निराला नगर, लखनऊ-226020
फोन नं. : 0522-405302
ईमेल : sms2019ps@gmail.com

संरक्षक मण्डल

मा. ब्रह्मदेव शर्मा
मा. यतीन्द्र शर्मा
मा. डोमेश्वर साहू
मा. हेमचन्द्र जी

प्रधान सम्पादक

उमाशंकर मिश्र
ईमेल :
umashankarmisra1957@gmail.com

सम्पादक मण्डल

डॉ. शिव भूषण त्रिपाठी
दिनेश कुमार सिंह

शुल्क

वार्षिक मूल्य : 120
दस वर्षीय : 1000

स्वामी–शिशु शिक्षा प्रबंध समिति, प्रकाशक एवं मुद्रक–डॉ० शिवभूषण त्रिपाठी द्वारा प्रिंटिको प्रिंटर्स, २२ जगत नारायण रोड, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एवं केशव कृपा, सरस्वती कुंज निराला नगर, लखनऊ से प्रकाशित, सम्पादक–उमाशंकर मिश्रा।

पीआरवी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार किसी तरह के कानूनी विवाद का निपटारा लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

कर्म की सर्वोपरि

एक बार स्वामी सदानन्द जी से उनके शिष्य गंगा स्नान की आज्ञा माँगी । अपने प्रिय शिष्य को गंगा स्नान की आज्ञा देते हुए स्वामी जी ने उसे एक नीम की लकड़ी का छोटा सा टुकड़ा दिया और कहा, जाओ वत्स और मेरे इस छोटे से लकड़ी के टुकड़े को भी पवित्र गंगा जल से धो लाना, ताकि यह भी मीठा हो जाए। शिष्य को गुरु जी की इस आज्ञा पर आश्चर्य तो हुआ परन्तु उसने वापस आकर गंगा जल से धोए लकड़ी के टुकड़े को गुरु जी को वापस दिया। इस पर गुरु जी ने आज्ञा दी कि वह उस लकड़ी के टुकड़े को चबाए । शिष्य ने उस टुकड़े को चबाते ही थूक दिया। और कहा–गुरुदेव यह लकड़ी तो अभी भी कड़वी ही है। तब स्वामी जी ने कहा, पुत्र मैं तुम्हें समझाना चाहता था कि केवल गंगा स्नान से कोई पवित्र नहीं हो सकता। कर्मो से ही पवित्रता या अपवित्रता होता है। इसलिए कर्म ही सर्वोपरि होता है।

अपनी पीड़ा को सह लेना और दूसरे जीवों कों पीड़ा न पहुंचाना। यही तपस्या का स्वरूप हैं'' ।।

हरि पल कुछ सिखाता है

हम में से कोई हर तरह से पूर्ण नहीं होता। हर एक मे कोई न कोई कमी जरूर होती है। इस बात को मानकर जो अपने आप में सुधार कर लेता है उसी में कुछ कर पाने की क्षमता हो सकती है।

हमारे आस–पास ज्यादातर लोग ऐसे होते हैं जिन्हें अपनी गलतियों को सुधारने में शर्म महसूस होती है। लेकिन सच तो यह है कि यह लक्षण हमे केवल अवनमन की ओर ही तो जा सकते है।

सीखने का कोई अन्त नहीं। न ही इसकी कोई उम्र होती है और न ही यह बात मायने रखती है कि आप किससे सीख रहे हैं। मायनें तो यह बात रखती है कि आप कितना ज्यादा सीख पाते हैं।

अगर हम वाकई सीखना चाहते हैं तो हर क्षण कुछ न कुछ सीख सकते हैं। यह जरूरी तो नहीं कि कोई गलती करने के बाद ही हम कुछ सीखें। हमें अपने आस–पास की हर चीज से सीखना चाहिए।

अपनी बात

आज हमारा जीवन कृत्रिम होता जा रहा है, आधुनिकीकरण पश्चिमीकरण सम्यता के प्रभाव में आकर हम अपनी शुद्ध सनातन वैदिकधर्म, संस्कृति एवं परम्पराओं, धरोहरों को भूलते जा रहे हैं यह हमारे लिए एक चिन्ता का विषय है। किसी राष्ट्र के नागरिकों के आनन्दपूर्ण जीवन जीने और विकास के लिए वहाँ के सनातन धर्म–संस्कृति और परम्पराओं की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है।

वस्तुतः वैदिक धर्म–संस्कृति ही भारतीय सनातन धर्म और संस्कृति है जिसमें उदारता, व्यापकता विश्वबंधुत्व का भाव समाहित है। यहाँ भेद–भाव आदि संकीर्णता का भाव कभी भी समादृत नहीं रहा है। ''अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्। उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।'' का चिन्तन ही प्रधान रहा है किन्तु यदि धार्मिक मूल्यों का ह्रास होने लगता है तो समाज अथवा राष्ट्र की सभ्यता छिन्न–भिन्न हो जाती है। अस्तु हमारे लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम अपने सनातन को जाने, समझें और अपनी अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित करें। इसी दृष्टि से 'हिन्दू जीवन पद्धति' एक नए स्तम्भ के अन्तर्गत सनातन के कुछ महत्वपूर्ण तत्थों का उल्लेख किया जायेगा।

हिन्दू जीवन पद्धति विश्व की प्राचीनतम, सुव्यवस्थित एवं अत्यन्त वैज्ञानिक पद्धति है। इस पद्धति में मानव जीवन को चौबीस घण्टे (दिन–रात) के भीतर नियन्त्रित रखने का विधान बतलाया गया है। चौबीस घण्टे का आठ विभाग कर जीवन को चलाने हेतु क्रमपूर्वक अनुशासनबद्ध किया गया है। प्रातः काल का तीन घण्टा पूजन–हवन–योगाभ्यास के लिए, उसके बाद का तीन घण्टा वैश्वदेव–अतिथि सत्कार–वस्त्रधारण–वाहन आदि की तैयारी के लिए, तत्पश्चात् छः घण्टा का समय जीविका (सर्विस), व्यवसाय, लोकव्यवहार के लिए, सायं काल का तीन घण्टा संध्या–गोधूलि–विश्राम–स्वल्पाहार आदि के लिए, रात्रि के पूर्वार्द्ध का तीन घण्टा चिन्तन–अध्ययन–रात्रिभोजन के लिए और शेष छः घण्टा रात्रि शयन के लिए विभाजित है। इस प्रकार से चौबीस घण्टे का विभाजन प्रत्येक मनुष्य के लिए किया गया है। यह विभाजन इतना वैज्ञानिक है कि इसके अनुसार जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति न तो कभी बीमार पड़ेगा और न ही असमय रोगग्रस्त या वृद्ध होगा। इस चौबीस घण्टे के काल विभाजन के आधार पर ही सौ वर्ष या इससे अधिक की आयु को जीते हुए पृथ्वी पर रहने को कहा गया है। मानव जीवन पूर्णतः ब्रह्माण्ड गणित के नियमों पर टिका हुआ है। जो व्यक्ति इसकी अवहेलना करता है वह असाध्य रोग, दुर्घटना, दुर्भाग्य और बाहरी–भीतरी झंझावातों का शिकार होता है। इसीलिए पर्यावरण संतुलन और प्रकृति से सामंजस्य बिठा कर चलने की बात कही जाती है। हिन्दू जीवन पद्धति में व्रत–पर्व उत्सव आदि सब श्रेष्ठ जीवन जीने की कला पर आधारित हैं यह विचार विद्यार्थियों तक पहुचना उत्तम होगा। महाशिव रात्रि तथा होली की शुभकामनाओं के साथ यह अंक आपको समर्पित है।

छत्रपति शिवाजी द्वारा अफजल खाँ का वध

कमलेश कुमार सिंह
प्रबन्धक–सरस्वती प्रकाशन

बीजापुर के शासक ने अनुमान लगाया कि शिवाजी को अधीन करना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा सम्पूर्ण देश निकल जाने का सन्देह है। इस लड़ाई के लिए बीजापुर दरबार में अफजल खां को शिवाजी को बन्दी बनाने का कार्य सौंपा गया जिसे अफजल खां ने इसकी सिपहसालारी स्वीकार की और चलते समय भरे दरबार में बड़े अहंकार से यह प्रतिज्ञा की कि मैं बहुत शीघ्र इस तुच्छ द्रोही को नंगे पांव दरबार में उपस्थित करूंगा अन्यथा उसका सिर काट लाऊंगा। शिवाजी को जब यह समाचार मिला तो उन्होंने प्रतापगढ़ के दुर्ग में सामना करने की तैयारी की। अफजल खां ने 5000 घुड़सवार तथा 7000 पैदल सेना, तोपखाना व अन्य सामग्री साथ लेकर चढ़ाई कर दी।

प्रतापगढ़ किला उन किलों में से है जिसे शिवाजी ने स्वयं बनवाया था। प्रतापगढ़ की स्थानिक व्यवस्था शिवाजी की बुद्धिमत्ता तथा विचारशीलता का प्रमाण देती है। प्रतापगढ़ दुर्गम पहाड़ों की श्रेणी में है जो उत्तर दिशा में है किले की इमारत बहुत मजबूत थी। उत्तरी किले में शिवाजी की अराध्या देवी का मन्दिर था। ऊपरी भाग में महादेव तथा पार्वती का मन्दिर था। शिवाजी का अपना निवास स्थान भी इसी में थोड़ी जगह में था। शिवाजी इसी किले के अन्दर थे उसी समय शिवाजी ने अफजल खां की सेना देखी और विचार किया कि इस विशाल सेना का सामना करना कठिन है।

अंग्रेज लेखक स्टाक साहब ने लिखा है कि मुसलमानों के इतिहास के मुकाबले मराठों के इतिहास अधिक विश्वास करने योग्य हैं सम्पूर्ण मराठा लेखक इस बात पर सहमत हैं कि अफजल खां स्वयं उत्कंठित था कि शिवाजी को मेलजोल में फंसाकर हनन करें। शिवाजी शरीर से दुबले थे परन्तु अफजल खां की मोटाई को कुछ नहीं समझते थे उन्हें पूर्ण विश्वास था कि यदि अचानक एकाकी मेरे सम्मुख आ भी जाएगा तो मैं उसे कत्ल कर डालूंगा। दरबार से प्रस्थान करते समय अफजल खां ने अत्यन्त अभिमान से कहा था कि शिवाजी को जरूर पकड़ लाऊंगा इसी लिए उसने अपने एक ब्राह्मण को शिवाजी के पास भेजा था कि वह जाकर शिवाजी को एकाकी मुलाकात के लिए उत्साहित करे तथा उसके द्वारा यह भी कहला भेजा कि यदि शिवाजी आधीनता स्वीकार कर लेगा तो उसके लिए बहुत उत्तम होगा। उधर शिवाजी को भी दूत ने यह समाचार दिया कि अफजल खां की भावना दुष्ट है और उसकी इच्छा है कि किसी तरीके से शिवाजी को फंसाया जाए। अफजल खां के दूत (ब्राह्मण) को जब धर्म की सौगन्ध दी गयी तो उसने सम्पूर्ण वृत्तांत सत्य–सत्य बखान कर दिया शिवाजी ने सोचा कि भाग्य परीक्षा अवश्य करना चाहिए। अतएव मिलने की स्वीकृति दे दी। फलस्वरूप मिलने का स्थान नियत किया गया। शिवाजी पूर्ण रूप से सुसज्जित होकर रवाना होने के पूर्व स्वयं पूजा भक्ति करके शस्त्र बाँधा और भीतर सज्जो पहिना उसके ऊपर साधारण सादा अंगरखा पहना और वहां से रवाना हुए ।

जिस समय शिवाजी से गले मिलने की इच्छा से अफजल खां आगे बढ़ा और पास जाकर

शिवाजी का माथा पकड़कर जोर से दबाना आरम्भ किया और झट से म्यान से तलवार निकाल शिवाजी पर चलाई परन्तु शिवाजी के बदन पर जो सज्जो आदि वस्त्र थे उसके कारण तलवार कुछ कार्य न कर सकी। शिवाजी ने अत्यन्त चतुरता के साथ बांये हाथ में लगा हुआ बिछुआ (बघनखा) अफजल खां की आंतड़ियों में घुसेड़ दिया। अफजल खां वहीं ढेर हो गया। उसका शरीर एक पहाड़ी पर दबा दिया गया उसके सिर पर एक बुर्ज बनवा दिया गया जो आज भी मौजूद है जो अब्दुल्ला की मीनार के नाम से प्रसिद्ध है। अफजल खां का असली नाम अब्दुल्ला था।

विद्याभारती ने माता–पिता के प्रति कृतज्ञ, समाजनिष्ठ, संवेदनशील और राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत पीढी निर्माण में जो सफलता पायी है उसमें अभिभावकों का योगदान अविस्मरणीय है क्योकि हमारे अभिभावकगण केवल माता–पिता नहीं वरन दूरदृष्टि सम्पन्न, सजग राष्ट्रभक्त और भविष्य दृष्टा है। वे उन मूल्यों के लिए स्वयं भी समर्पित है जिन्हें अपनी संतानों में विकसित होते हुए देखना चाहते हैं।

अभिभावक बन्धु–बहनों ने सेवा और संस्कार के केन्द्र चलाया है। नये–नये क्षेत्रों में भूमि भवन दिया अथवा दिलाया है, जहाँ हम नये विद्यालय खड़ा कर सकें। सैकड़ो पूर्व अथवा वर्तमान अभिभावक हमारी प्रबन्ध समितियों, जिला प्रान्तीय, क्षेत्रीय समितियों के अंग बनें। इतना ही नहीं विद्या भारती से आगे बढ़कर विशाल राष्ट्रवादी विचार परिवार में भी उनकी व्यापक भागीदारी है।

अभिभावक गोष्ठियों–सम्मेलनों में उनकी सहभागिता ने विद्यालय को उन्नत करने में सहयोग किया है। हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप घर में भैया बहनों को अभिरक्षण एवं प्रोत्साहन दिया है। चुनौतियों के बीच अतिरिक्त समय निकाला है और कई बार समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों को विद्यालय या विद्या भारती से जोड़ा है।

हमारा विश्वास है कि अभिभावक हमारी बड़ी ताकत हैं। यह सामर्थ्य हमें शिक्षा क्षेत्र की पुनर्रचना करने, शिक्षा के केन्द्र में भारत को लाने और भारत को ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति बनाने में हमारा सहयोग, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। हमारे आचार्य–प्रधानाचार्य इस महाशक्ति की महत्ता को समझ कर उनके समुचित नियोजन के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाए, सही तरह चलना सिखाए।
माता-पिता से पहले आता, जीवन में सदा आदर पाता।
सबको मान प्रतिष्ठा जिससे, सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी रही न दूर मैं जिससे, वह मेरा पथप्रदर्शक है जो।
मेरे मन को भाता, वह मेरा शिक्षक कहलाता।
कभी है शांत, कभी है धीर, स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा, काश मैं उस जैसी बन पाती,
जो मेरा शिक्षक कहलाता। जीवन को रौशन करते हैं शिक्षक।।
तो अच्छे दोस्त बनकर हमें हँसाते हैं शिक्षक।।
झटकती है दुनिया हाथ कभी जब, तो झटपट हाथ बढ़ाते शिक्षक।।
घर के बाद वह एक मंदिर है।।
जिसमें हम अपना पूरा समय बिता सकते हैं।।
वह एक शिक्षा का मंदिर है,
जिसमें हम शिक्षा पा सकते हैं।

हमारे सहयोगी : अभिभावक

विद्या भारती के अन्तर्गत संचालित विद्यालय अपने 'पंच–प्राण' के सम्बल पर अवलम्बित ही नहीं बरन गौरवान्वित है। एक शैक्षिक संगठन के रूप में हमारी यात्रा के सात दशकों में हमने जिन उपलब्धियों को प्राप्त किया है इनमें सभी की महत्वपूर्ण भूमिका है। छात्र–भैया बहन, आचार्य परिवार, प्रबन्धन के बन्धु भगिनी, हमारे पूर्व छात्र भैया–बहन के अतिरिक्त हमारे अभिभावक भी विद्या भारती की सामर्थ्य के आधार स्तम्भ हैं।

हम विद्यालय को 'घर जैसा' और घर को 'विद्यालय जैसा' विकसित करने की कल्पना करते हैं। इसमें जहाँ आचार्य परिवार की भूमिका को विस्तार मिलता है वहीं अभिभावक की भूमिका पर अनन्य विश्वास भी परिलक्षित होता है। हमारी संस्थाओं के संचालन में अभिभावकों की महत्ता बहुआयामी है वे हमारे सहयोगी भी रहे हैं, सहधर्मी भी रहे हैं, मार्गदर्शक भी और प्रेरणा भी।

विद्या भारती की विकास यात्रा में यह अनुभूति निरंतर गहरी होती गयी कि हमारे अभिभावक सदैव हमारी संस्थाओं के शुभचिन्तक रहे है। अभाव ग्रस्त, संसाधन विहीन छोटी–छोटी संस्थाएं आज बड़े–बड़े केन्द्र बनकर खड़ी है तो उनमें अभिभावकों का भावनात्मक लगाव महत्वपूर्ण साधन है। आधारभूत संरचना के विकास में, शैक्षिक उन्नयन में, सामाजिक स्वीकृति स्थापित करने में और हमारी अपेक्षा के अनुकूल वातावरण निर्मित करने में हजारों–लाखो विद्वान–विदुषी अभिभावक बन्धु भगिनी का आर्थिक सहयोग, वैचारिक मार्गदर्शन, शैक्षिक चिन्तन तथा बहुमूल्य समयदान महत्वपूर्ण रहा है।

जहाँ–जहाँ हमने अपने अभिभावकों से जैसी अपेक्षा किया उनका सहयोग विद्या भारती को प्राप्त हुआ है। नन्हें शिशु भैया बहनों के शिशु शिविरों में चार–पांच–छः वर्ष के वे बच्चे जो कभी परिवार और माता–पिता से अलग नहीं रहे, उन्हें हमारे अभिभावकों ने हम पर विश्वास करके बार–बार भेजा है। मैने शिशु शिविरों के बाहर माताओं को रोते देखा है, किसी मजबूरी में नहीं, भावनाओं के वशीभूत होने के कारण।

हमारे अभिभावक केवल छात्रों के माता–पिता नहीं वरन विद्यालय के हित चिन्तक रहे हैं। जहाँ कहीं समाज में शिक्षा और संस्कार की बात होती है वे शिशु मन्दिरों और विद्या मन्दिरों की बाल केन्द्रित, क्रिया आधारित, संस्कार पूर्ण, समाज पोषित, विशेषताओं को खुले हृदय और सशक्त शब्दों से प्रस्तुत करते रहे हैं। हमारी कमजोरियों की

ओर भी हमारे अभिभावकों ने समय–समय पर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है और विशेषताओं का प्रचार किया है।

विद्याभारती ने माता–पिता के प्रति कृतज्ञ, समाजनिष्ठ, संवेदनशील और राष्ट्रभक्ति से ओत–प्रोत पीढी निर्माण में जो सफलता पायी है उसमें अभिभावकों का योगदान अविस्मरणीय है क्योकि हमारे अभिभावकगण केवल माता–पिता नहीं वरन दूरदृष्टि सम्पन्न, सजग राष्ट्रभक्त और भविष्य दृष्टा है। वे उन मूल्यों के लिए स्वयं भी समर्पित है जिन्हें अपनी संतानों में विकसित होते हुए देखना चाहते हैं।

अभिभावक बन्धु–बहनों ने सेवा और संस्कार के केन्द्र चलाया है। नये–नये क्षेत्रों में भूमि भवन दिया अथवा दिलाया है, जहाँ हम नये विद्यालय खड़ा कर सकें। सैकड़ो पूर्व अथवा वर्तमान अभिभावक हमारी प्रबन्ध समितियों, जिला प्रान्तीय, क्षेत्रीय समितियों के अंग बनें। इतना ही नहीं विद्या भारती से आगे बढ़कर विशाल राष्ट्रवादी विचार परिवार में भी उनकी व्यापक भागीदारी है।

अभिभावक गोष्ठियों–सम्मेलनों में उनकी सहभागिता ने विद्यालय को उन्नत करने में सहयोग किया है। हमारी अपेक्षाओं के अनुरूप घर में भैया बहनों को अभिरक्षण एवं प्रोत्साहन दिया है। चुनौतियों के बीच अतिरिक्त समय निकाला है और कई बार समाज के श्रेष्ठ व्यक्तियों को विद्यालय या विद्या भारती से जोड़ा है।

हमारा विश्वास है कि अभिभावक हमारी बड़ी ताकत हैं। यह सामर्थ्य हमें शिक्षा क्षेत्र की पुनर्रचना करने, शिक्षा के केन्द्र में भारत को लाने और भारत को ज्ञान की वैश्विक महाशक्ति बनाने में हमारा सहयोग, मार्गदर्शन और प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। हमारे आचार्य–प्रधानाचार्य इस महाशक्ति की महत्ता को समझ कर उनके समुचित नियोजन के लिए प्रयत्नशील रहेंगे।

मुस्कान

मुस्कुराते रहो।
रोने–धोने के रास्ते तो खूब हैं,
रोकर भी मुस्कुराते रहो।।
हैं हजार चट्टाने दुःख के,
चट्टानों को तोड़कर आगे बढ़ते रहो।
देख कर डर न जाना चट्टानों को
डर कर मोड़ न लेना अपने रास्तों को,
तुम उन्हें चीरकर आगे बढ़ते रहो।
हैं कितने भी दुःख दफन तुम्हारे सीने में,
पर माथे पर शिकन न आने दो।
खुद रोकर भी दूसरों को हँसाते रहो
मुस्कुराते रहो।।
हैं जिंदगी एक रंगीन पक्षी की तरह
तुम जितना चाहे उड़ान भरते रहो,
दुःख क्या बिगाड़ लेगा इस जिंदगी का
दुःख सहकर तुम सुख लुटाते रहो।
है रंग बिरंगी यह दुनिया,
मत फंस कर रह जाओ एक ही रंग में
दुःख तो है हजार
पर मुस्कान न जाने दो,
हो जाएँगे सारे रास्ते आसान
लिए चेहरे पर मुस्कान
मुस्कुराते रहो!!

त्योहार का इतिहास और महत्व

होली का त्योहार मुख्य रूप से हिन्दुओं का प्रमुख पर्व होता है और इसका इतिहास सदियों पुराना है, जो हमें प्राचीन समय की कथाओं की याद दिलाता है। होली का त्योहार मुख्य रूप से रंगों का त्योहार होता है और इस दिन का हिंदू धर्म में विशेष महत्व है। होली दो दिनों तक मनाई जाती है जिसमें पहले दिन होलिका दहन होता है जिसे छोटी होली भी कहा जाता है और दूसरे दिन रंगों का त्योहार होता है जिसमें लोग मिल जुलकर रंग खेलते हैं और खुशियां मनाते हैं। पानी के गुब्बारों और पिचकारी से बहुत पहले से ही होली खेलने का चलन चला आ रहा है। यहुत पहले होली केवल हिन्दू धर्म का त्योहार था लेकिन अब ये दुनिया भर में एक उत्सव की तरह मनाया जाता है।

होली का इतिहास-

होली यह दिन होता है जब होलिका, जिसे अग्नि में अखंड रहने का वरदान प्राप्त था उन्होंने प्रङ्गाद को अपनी गोद में बैठाकर अग्नि में प्रवेश किया था। उस समय भगवान विष्णु प्रङ्गाद की सहक्रयाल के दिए आम और परिणामस्वरूप, होलिका अग्नि में जल गई, जबकि पड़ाद को कोई नुकसान नहीं हुआ। बोगी अर्थिनी को बताते हैं कि पुराणों की कहानियां एक जाम आदमी के लिए पौराणिक कथाएं प्रतीत होती है कि उसने पति पटनाएं अक्सर उन चीजों का उल्लेख करती है जो अलौकिक या असली लगती उदाहरण केभिए आज में बदाम रहने की शक्ति या विष्णु नामक ऊर्जा का आह्वान। पुराण बास्तर में हमारे पूर्वजों के साथ घटित कस्तविक घटनाओं का इतिहास होते है जो निवाकिया था। इसलिए होली का इतिहास भी पुराणों से जुड़ा हुआ है।

होलिका दहन की पौराणिक कथा-

होलिका दहन की कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक राजा थे जिनका नाम हिरण्यकश्यप था। उनका बेटा प्रहलाद भगवान विष्णु का परम भक्त था और विष्णु जी की भक्ति में लीन रहता था। हिरण्यकश्यप को यह बात पसंद न थी इसलिए उन्होंने प्रह्लाद को कई तरीकों से मारने का प्रयास भी किया। अंततः उन्होंने अपनी बहन होलिका से कहा कि यह प्रह्लाद को लेकर अग्नि में प्रवेश कर जाए जिसके परिणामस्वरूप होलिका जल कर मर गई और भक्त प्रह्लाद बच गए। जिसके पश्चात हिरण्यकश्यप की क्रूरता को समाप्त करने हेतु भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार लिया और हिरण्यकश्यप को समास कर दिया। तभी से होलिका दहन का प्रचलन शुरू हुआ और होलिका की अग्ति में बुराइयों के समाप्त होने के बाद खुशियां मनाने के लिए अगले दिन रग खेलने की प्रथा शुरू हुई।

होली का महत्व-

होली का त्योहार मुख्य रूप से वसंत ऋतु यानी कि वसंत की फसल के समय मनाया जाता है जो सर्दियों के अंत का प्रतीक भी माना होता है और हिंदू कैलेंडर के फाल्गुन महीने में मनाई जाती है।

यह उत्सव फाल्गुन पूर्णिमा तिथि (जानें कब से शुरू हो रहा है होलाष्टक) की शाम से ही शुरू हो जाता है और दो दिन तक मनाया जाता है। होली रंगों का तथा हंसी खुशी का त्योहार है। यह भारत का एक प्रमुख और प्रसिद्ध त्योहार है, जो अब विश्वभर में मनाया जाने लगा है। यह दिन बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। लोग इस दिन एक अग्नि जलाते हैं और भगवान विष्णु के लिए भक्त प्रहलाद की भक्ति की विजय का जश्न मनाते हैं। इस दिन लोग होलिका की पूजा भी करते हैं क्योंकि हिंदू पौराणिक कथाओं में यह माना जाता है कि होलिका पूजा सभी के घर में समृद्धि और धन लाती है। लोगों का मानना है कि होलिका पूजा करने के बाद वे सभी प्रकार के भय पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। होलिका दहन के अगले दिन को धुलेंडी कहा जाता है जिसमें अबीर–गुलाल इत्यादि डाला जाता है और दूसरों से सौहार्द्र जताया जाता है।

होली का सांस्कृतिक महत्व-

होली से जुड़े विभिन्न किंवदंतियों का उत्सव लोगों को सच्चाई की शक्ति के बारे में आश्वस्त करता है क्योंकि इन सभी किंवदंतियों का नैतिक बुराई पर अच्छाई की अंतिम जीत है। हिरण्यकश्यप और प्रहलाद की कथा भी इस तथ्य की ओर इशारा करती है कि भगवान की अत्यधिक भक्ति भुगतान करती है क्योंकि भगवान हमेशा अपने सच्चे भक्त को अपनी शरण में लेते हैं। ये सभी लोगों को अपने जीवन में एक अच्छे आचरण का पालन करने और सच्चे होने के गुण में विश्वास करने में मदद करती हैं। होली लोगों को सच्चे और ईमानदार होने के गुण में विश्वास करने और बुराई से लड़ने में मदद करती है। इसके अलावा, होली साल के ऐसे समय में मनाई जाती है जब खेत पूरी तरह खिल जाते हैं और लोग अच्छी फसल की उम्मीद करते हैं। यह लोगों को होली की भावना में आनंदित होने, आनंद लेने और खुद को डूबने का एक अच्छा कारण देता है।

सामाजिक महत्व-

होली समाज को एक साथ लाने और एक दूसरे के बीच ताने–बाने को मजबूत करने में मदद करती है। क्योंकि, यह त्योहार हिंदुओं के अलावा अन्य धर्मों में भी मनाया जाता है। होली की परंपरा यह है कि होली पर शत्रु भी मित्र बन जाते हैं और आपसी किसी भी लड़ाई को भूल जाते हैं। इस दिन लोग अमीर और गरीब के बीच भी अंतर नहीं करते हैं और सभी लोग मिलनसार और भाई चारे की भावना के साथ इस त्योहार को मनाते हैं।

❖ अनमोल वचन ❖

- भगवान ही तुम्हारा स्थान है, तुम्हारा परम साश्रय स्थल है। उस नित्य स्थान में रहते हुए ही सारे कर्मो का आचरण करो। फिर चाहे तुम किसी देश, ग्राम किसी घर में रहो, कोई आपत्ति की बात नहीं है।
- जब तुम्हारे कर्म भगवत्पूजा के लिए होगें तब तुम्हारी सारी चिन्ताएं मिट जायेंगी सारी कठिनाइयाँ दूर हो जायेंगी सारी प्रतिकूल तथा बाधक परिस्थितियाँ हट जायेंगी, सब ओर एक विलक्षण, सामंजस्य एक सरस समन्वय दिखाई देगा। तुम्हारे कार्य में बाधा देने वालों की संख्या क्रमशः घट जायेगी और सभी ओर से सहायता की वर्षा होने लगेगी।

परम पूजनीय गुरु जी

चन्द्रपाल सिंह
संकलन कर्ता

श्री गुरु जी संघ के द्वितीय सरसंघचालक थे। उनका जन्म 19 फरवरी सन् 1906 में नागपुर में हुआ था। श्री गुरुजी उनका मूल नाम नहीं था। जब वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाते थे तब छात्र आदर से उनको 'श्री गुरु जी' नाम से संबोधित करने लगे। उस समय से वही नाम संघ में और देश भर में चल गया। उनका नाम था माधव राव सदाशिव राव गोलवलकर। इनके पिताजी का नाम सदाशिवराव तथा माताजी का नाम लक्ष्मीबाई था। उनका निवास नागपुर में था। बचपन में श्री गुरुजी को 'मधु' नाम से पुकारा जाता था। पिताजी अध्यापक थे।

माधवराव के घर में अच्छा सात्विक और धार्मिक वातावरण था। बचपन से उनको सुबह जगाते समय माताजी मधुर आवाज से भक्ति के गीत गाती थी। उनके मन पर उनके संस्कारों की अमिट छाप पड़ती रही। बड़े होने पर भी माता जी के गीतों को वे भाव पूर्ण ढंग से स्मरण करते थे। बचपन से ही माधवराव की तीक्ष्ण बुद्धिमत्ता और असाधारण स्मरण शक्ति का परिचय होने लगा था। एक बार उनके विद्यालय के आचार्य प्रो. गार्डनर बाइबल का पाठ पढ़ा रहे थे। उस पाठ के बीच में माधवराव ने खड़े होकर अपने अध्यापक को कहा, ''इस वाक्य का आपने जो सन्दर्भ दिया है वह ठीक नहीं है, वास्तव में यह वाक्य होना चाहिए। ऐसा कहकर वे दूसरा एक वाक्य बोलकर दिखाया।'' कक्षा के सारे विद्यार्थी स्तम्भित रह गए और प्राध्यापक गार्डनर भी परन्तु 'बाईबल' लाकर जब संदर्भ देखा गया तो माधवराव ने जो। बताया था वही सही निकला। कक्षा समाप्त होने के बाद प्रोफेसर साहब ने प्रेम से उनकी पीठ थपथपाई। इस घटना से माधवराव की स्मरण शक्ति के अलावा उनकी निर्भयता एवं अटूट आत्मविश्वास भी सभी के ध्यान में आ गया। बड़े होने पर भी अंतिम दिनों तक श्री गुरु जी की स्मरण शक्ति कायम रही।

नागपुर में इण्टर तक की शिक्षा पूरी होने के बाद माधवराव 1924 में बी. एस. सी. की पढ़ाई के लिए देश के प्रख्यात काशी हिन्दू विश्व–विद्यालय चले गए। वहाँ जाकर माधवराव एकाग्रचित्त से एक के बाद एक पुस्तक पढ़कर समाप्त करते थे। एक दिन उनके पैर की उंगली मैं बिच्छू ने काटा, परन्तु माधवराव उस भाग को थोड़ा सा काटकर, पोटैशियम परमैगनेट के पानी में पैर रखकर पढ़ने में पूर्ववत तल्लीन हो गए। उनके एक मित्र ने आश्चर्य चकित होकर पूछा, ''इस भयानक दर्द के बीच में, आपने पढ़ना कैसे जारी रखा है?'' तब माधवराव ने सहजता से उत्तर दिया, ''बिच्छू ने पैर में काटा है, सिर में तो नहीं।'' आगे भी चलकर कई बार भयानक शरीर–पीड़ा को भी उनके द्वारा शांत–चित्त से सहन करने के दृश्य लोगों ने देखे हैं।

काशी से एम. एस. सी. (प्राणि शास्त्र) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर माधवराव नागपुर वापस आ गए और कुछ माह के पश्चात् चेन्नई के 'मत्स्यालय' में शोध कार्य करने हेतु चले गए। लोगों को वहाँ भी उनको कठोर अनुशासन प्रियता का अनुभव आया। एक बार उस प्रयोगशाला की प्रदर्शनी देखने के

लिए हैदराबाद के निजाम आने वाले थे। सबके लिए प्रवेश शुल्क तय हुआ था। निजाम जैसे बड़े आदमी से वह शुल्क नहीं लेना चाहिए ऐसा वहाँ के प्रबंधक लोग सोचने लगे। परन्तु माधवराव के आग्रह के कारण निजाम को भी प्रवेश शुल्क देकर ही अन्दर जाना पड़ा। 1929 में उनके पिताजी के सेवा निवृत्त होने से माधवराव के लिए चेन्नई में आवश्यक धन भेजना असंभव हुआ, इसलिए उन्हें चेन्नई का शोध कार्य बीच में ही छोड़कर नागपुर वापस आना पड़ा।

अगस्त 1931 से माधवराव काशी हिन्दू विश्व विद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। उस काल खण्ड में माधवराव के और भी कई अनोखे सद्गुण प्रकाश में आने लगे। अपने विद्यार्थियों पर असीम संघ के सरसंघचालक पद पर आसीन हुए हैं। तदुपरान्त 5 जून 1973 तक अर्थात अपने महानिर्वाण के समय तक गुरु जी ने इस दायित्व का निर्वाह करते, ''राष्ट्रीय स्वाहा, इदं राष्ट्राय, इदंनमम्'' के मंत्र का पालन करते हुए अपना सर्वस्व भारत माता की सेवा में समर्पित किया।

भारत माता की सेवा के लिए माँ की अनुमति

परम पूजनीय गुरु जी की पूजनीया माताजी पर अचानक पक्षाघात का आक्रमण हुआ । सूचना मिलने पर गुरु जी माता माता के पास आए। उनके हितैषी के रुप में डाक्टर घटे सदा साथ में रहते थे। गुरु जी ने उनसे माता जी का निरीक्षण करवाया। डा० थट्टे ने निरीक्षण करके बताया– यह पक्षाघात का प्रकोप है। इसकी पूर्ण चकित्सा संभव नहीं है।

पक्षाघात के विशेषज्ञ डॉक्टर बुलाए गए और माता जी का उपचार आरम्भ हुआ। गुरु जी का प्रवासी जीवन था। वे सदा ही संगठन के कार्य के लिए प्रवास करते रहते थे। उनके स्वीकृत कार्यक्रम का समय हो चुका था। किन्तु मातृभक्त गुरुजी माता जी की अनुमति के बिना, उनकी रुग्णावस्था में कैसे प्रवास कर परं जा सकते थे। वे अनुमति लेने के लिए चरणों में उपस्थित हुए। माता जी को प्रणाम करके बड़े ही विनम्र शब्दों में उन्होंने पूछा, ''माँ, कई स्थानों का कार्यक्रम बना चुका हूँ। आज जाना निश्चित हुआ है। आपकी अनुमति हो तो चला जाऊं ?''

माँ उस समय विशेष कष्ट में थी। पुत्र के दायित्व की गरिमा के सम्बन्ध में वह उस क्षण विचार न कर सकी। उन्होंने सहज स्नेहवश कह दिया – '' नहीं।''

माँ के शब्द गुरु जी के लिए विधि वाक्य थे । उन्होंने तत्काल मन में सोच लिया– माँ की इच्छा भेजने की नहीं है तो सब स्थानों को प्रेम के कारण उनकी पढ़ने में वे हर प्रकार की सहायता करते थे, यदि कोई विद्यार्थी गरीब होता तो उसको आवश्यक पुस्तक खरीद कर देते और परीक्षा का शुल्क भरने के लिए आर्थिक मदद करते थे। उसके लिए अपने वेतन का काफी बड़ा भाग खर्च करने में उनको आनन्द का ही अनुभव होता था। अपने विषय के ही नहीं दूसरे विषय के विद्याधियों को भी पढ़ने में सहायता करने के लिए स्वयं उन विषयों का गहराई से अध्ययन करते थे। इस प्रकार की सहायता करते समय माधवराव के मन में किसी भी प्रकार की अपेक्षा नहीं थी। इन कारणों से विद्यार्थी उन्हें स्नेह और आदरवश गुरु जी कहकर पुकारते थे। कालान्तर में । यही उपनाम लोक प्रसिद्ध हुआ।

गुरु जी की प्रतिभा और विद्यार्थियों पर उनका प्रगाढ़ स्नेह ध्यान में आने से पण्डित मदनमोहन मालवीय जी उन पर विशेष प्रेम करने लगे। डॉक्टर जी के द्वारा विद्यार्थी के नाते वहाँ पर

भेजे गए नागपुर के स्वयंसेवक श्री भैया जी दाणी के द्वारा श्री गुरु जी संघ के संपर्क में आये। भैया जी दाणी ने उन्हें डॉ. हेडगेवार का संघ दर्शन समझाया। उनकी प्रेरणा से गुरु जी संघ शाखा में जाने लगे। 1933 के फरवरी मास के प्रारम्भ वे नागपुर लौट आए। 1934 में गुरु जी नागपुर की तुलसी बाग शाखा के कार्यवाह नियुक्त हुए। मई 1934 में अकोला में संघ शिक्षा वर्ग हुआ। गुरु जी को उस शिविर का सर्वाधिकारी बनाया गया। मकर संक्रान्ति 13 जनवरी 1987 को गुरुजी ने स्वामी अखण्ठानन्द जी से दीक्षा ली। डॉक्टर हेडगेवार जी ने गुरु जी को बंगाल में संघ प्रचार करने के दायित्व दिया। 22 मार्च 1939 को गुरुजी ने कलकत्ता में प्रथम संघ शाखा की स्थापना की।

21 जून 1940 को पूज्य डॉक्टर जी ने अपना पार्थिव शरीर त्याग दिया। 3 जुलाई 1940 को एक महत्वपूर्ण समारोह में नागपुर के प्रान्त संघचालक जी ने घोषित किया कि आज से राष्ट्रीय स्वयंसेवक तार द्वारा अपने कार्यक्रम निरस्त करने की सूचना दे दूं। लेकिन तभी मनमें मेरे निर्धारित कार्यक्रम में विहन पड़े, मां इसे कभी पसंद नहीं करती थी। संभव है, कष्ट की अधिकता के कारण इस समय उनका मस्तिष्क विशेष क्रियाशील न हो। कुछ देर बाद फिर माँ से पूछकर देखा जाए।

यह सोचकर उन्होंने कहीं भी सूचना नहीं दी। कुछ घण्टों बाद ग्यारह बजे के लगभग गुरु जी फिर से मां के चरणों में उपस्थित हुए और उनके सामने अपने कार्यक्रम की बात रखकर प्रवास पर जाने की अनुमति माँगी। माँ ने स्नेह से गुरुजी की ओर देखा और फिर कहा, बेटा जा, अपने कर्तव्य का मनुष्य और कुछ क्षण रूककर आगे कहा– बेटा। किसी का जीवन मरण किसी के। पालन करें पास में रहने से न–रहने–पर अवलम्बित नहीं होता। इस समय मेरी सेवा से अधिक भारत माता की सेवा की आवश्यकता है। तुम मेरी चिन्ता न करके दुखी प्राणियों का दुःख दूर करने का प्रयत्न करो। गुरु जी की आँखें गीली हो आई। मातृस्नेह से अभिभूत हो वे मातृ चरणों का स्पर्श कर अपने कर्तव्य पथ की ओर चल पड़े।

श्री गुरुजी का अदम्य साहस

परम पूज्य श्री गुरु जी ने संघ कार्य का देश भर में विस्तार किया। रेलगाड़ी का डिब्बा ही उनका व्यर था। एक बार आप कम्युनिस्टों के गढ़ केरल में गए। वहाँ संघकार्य का प्रबल विरोध था। खुले मंच पर श्री गुरु जी स्वयंसेवकों को सम्बोधित करने के लिए जैसे ही खड़े हुए तभी पीछे से कुछ हलचल हुई। रक्षा में नियुक्त स्वयंसेवक सर्तक हुए और अपने स्थान पर खड़े हो गए। गुरु जी ने उन्हें अपने स्थान पर बैठ जाने का निर्देश दिया।

भाषण प्रारम्भ हुआ। थोड़ी ही देर पश्चात् एक नुकीला पत्थर गुरु जी के सिर पर आ लगा। सिर से रक्त बहने लगा। सिर पर चोट की परवाह न करते हुए श्री गुरु जी ने भाषण देना चालू रखा। वाणी में नही क्रम, ओज तथा शब्द चित्र। उन्होंने बीच में कहा– मैंने अपना जीवन राष्ट्र को समर्पित किया है। यदि मेरे देशवासियों को मेरे रक्त से संतुष्टि होती है तो मैं उसके लिए सहर्ष तैयार हूँ।''

यह कहकर उन्होंने अपने दोनों हाथ आगे फैला दिए। सभा स्थल पर सन्नाटा छा गया। उस समय उपस्थित सभी जन अपने सम्मुख साक्षात् बुद्ध, ईसा और गाँधी के दर्शन कर रहे थे। कुछ समय पश्चात् पत्थर फेंकने वालों में से अनेक बंधु संघ के स्वयंसेवक बन गए। उनमें कुछ तो संघ के प्रचारक भी हुए।

खेल-खेल में गणित

बच्चों में गणित का भय दूर करने एवं रुचि पैदा करने के लिए खेलों का सहारा लिया जा सकता है। प्राथमिक स्तर के बच्चों के साथ कुछ इस तरह के रोचक खेल खेले जा सकते हैं।

खेल-1: गिनती व पहाड़े

कक्षा के सारे बच्चों को एक गोले में बिठाकर किसी भी बच्चे से गिनती शुरू करवाकर क्रमवार आगे बोलना है। जो बच्चा गलत बोलता है वह इस खेल से बाहर हो जाएगा। अगला बच्चा फिर 1 से शुरू करेगा। यह क्रम चलता रहेगा। जो बच्चा ध्यान पूर्वक गिनती बोलेगा और आउट नहीं होगा, वह विजेता होगा। यही खेल पहाड़े बोलकर भी खेला जा सकता है। इस खेल में एकाग्रता का बहुत महत्व है। सब बच्चों को ध्यानपूर्वक सुनना है कि उसका पड़ोसी क्या बोल रहा है।

खेल-2 : जोड़ व बाकी

बच्चों को सर्किल में बिठाकर कोई एक संख्या बोलेंगे और यह बताएंगे कि उसमें कितने जोड़ने हैं ? मिसाल के तौर पर हमने संख्या 4 बोली और उसमें 3 जोड़ते हुए आगे बढ़ना है जो बच्चा गलत बोलेगा वह बाहर हो जाएगा। इसी तरह घटाने का खेल भी खेल सकते हैं। मान लो संख्या 57 बोली उसमें से 2 घटाते हुए बोलना है। जो सही बोलेगा खेल में बना रहेगा जो गलत बोलेगा वह खेल से बाहर हो जाएगा।

खेल -3 : विभाजित होने वाली संख्या 2 पर आगे बढ़ो

विभाजित होने वाली संख्या पर आगे बढ़ो या गुड–या क्या फर्क पड़ता है आदि शब्द बोलना है। उदाहरण के लिए 4 से विभाजित संख्या नहीं बोलनी है। बच्चे 1,2,3 बोलेंगे 4 आने पर आगे बढ़ो बोला जाएगा। अगला बच्चा 5 बोलेगा। इस खेल में बहुत ही आनन्द आता है। ध्यान आकर्षण के साथ सहज भाव से बालक किसी भी संख्या से विभाजित होने वाली संख्या को सीख जाता है।

खेल-4 : ज्यामिति आकृतियाँ

ज्यामिति आकृतियों को पहचानने का भी एक खेल बच्चों को खिलाता हूँ। पहले कक्षा में बच्चों को कोण, त्रिभुज, आयत, वर्ग, वृत, बेलन बताकर, समझाकर फिर इस पर आधारित खेल खिलाता हूँ। एक गोला बनाकर उसमें कोण, त्रिभुज, आयत, वर्ग, वृत, गोला आदि बनाकर बच्चों को गोले में चारों ओर दौड़ने के लिए कहा जाता है। फिर बोला जाता है। है कि आयत, त्रिभुज में 2, 3 या 4 छात्र खड़े होंगे। जो बच्चे पहचानकर इन आकृतियों में खड़े हो जाते हैं वे खेल में बने रहते हैं, दूसरी आकृतियों में खड़े होने वाले खेल से बाहर हो जाते हैं। जहां यह खेल आनन्ददायी है वहीं पर ज्यामिति आकृतियों की पहचान कराने में बड़ा कारगर है।

खेल-5: खेल खेल में मूल्यांकन

अधिगम स्तर को जाँचने के लिए हम किसी भी विषय में इस खेल को आजमा सकते हैं। भय युक्त परीक्षा प्रणाली से हटकर खेल ही खेल में जो कुछ हमने सिखाया उसकी जाँच कर सकते हैं।

छोटे–छोटे प्रश्न बनाकर उनको पर्चियों में लिख दें। इनमें जितना हमने बच्चों को सिखाया है उससे सम्बन्धित ही प्रश्न हों। कक्षा–कक्ष में ही बच्चों को एक घेरा बनाकर बिठा दें। बारी–बारी से एक बच्चा पर्ची खोलेगा। प्रश्न पढ़ेगा और उसका उत्तर देगा। यदि बच्चा प्रश्न का उत्तर देता है तो वह खेल में बना रहेगा। गलत जवाब पर खेल से

बाहर हो जाएगा। यह काम निरन्तर चलता रहेगा। जो बच्चा सबसे अन्त तक खेलेगा, वह खेल का विजेता होगा। जिसे हम छोटा मोटा पुरस्कार देकर उत्साहित भी कर सकते है। इस खेल से जहाँ हमारे सिखाने की प्रक्रिया का आंकलन होगा, वहीं अधिगम स्तर को जांचने का बेहतरीन माध्यम है। यह खेल हम किसी भी पाठ के पश्चात खेल सकते हैं।

इस प्रकार और भी कई खेल हो सकते है जिनके द्वारा हम बालकों से गणित विषय का डर निकालकर उनमें रुचि पैदा कर सकते हैं।

माँ की ममता

दिल के टुकड़े करने वाला, दिल का टुकड़ा लगता है।
नालायक बेटा भी मों को, राजा बेटा लगता है।।
माँ की ममता जैसा निर्मल, कोई दर्पण क्या होगा।
जिसको धूल सना बच्चा भी, सूरज चन्दा लगता है।
पूछो तो नन्हें पक्षी से, जब धमकाता है मौसम।
माँ के पंखों में छिप जाना, कितना अच्छा लगता है।
जिसके चरणों में ज्ञानार्जन तीनों लोक बताते हैं।
मुझको माँ के चरणों में, सिमटा–सिमटा लगता है।
चुम्बन अंकित करती जब, सिर पर हाथ फिरा कर माँ।
अम्बर से भी ऊँचा मुझको अपना माथा लगता है।
माँ की गोद अगर मिल जाये, सारी दुनिया देकर भी।
महंगे युग में भी मुझको ये, सौदा सस्ता लगता है।

राखपत-रखापत

एक बार दिल्ली दरबार में बैठे हुए बादशाह अकबर ने अपने नवरत्नों से पूछा– 'भाई, यह बताओ, सबसे बड़ा पत यानी शहर कौन सा है? पहले नवरत्न ने कहा, 'सोनीपत। दूसरा नवरत्न– हुजूर पानीपत सबसे बड़ा पत है। तीसरे नवरत्न ने लम्बी हॉकी नहीं जनाब दलपत से बड़ा पत और कोई दूसरा नहीं है। चौथे ने कहा– सबसे बड़ा पत तो दिल्लीपत यानी दिल्ली शहर है।

बीरबल चुपचाप बैठे हुए सारी बातें सुन रहे थे।

बादशाह अकबर ने बीरबल से कहा तुम भी कुछ बोलो।

बीरबल ने कहा– सबसे बड़ा पत है राखपत और दूसरा बड़ा पत है 'रखापत'।

बादशाह अकबर ने पूछा 'बीरबल हमने सोनीपत, पानीपत, दलपत और दिल्लीपत सब सुन रखे हैं; पर राखपत और रखापत किस शहर के नाम हैं ?

बीरबल बोले, हुजूर राखपत का मतलब है मैं आपकी बात रखूँ और रखापत का मतलब है आप मेरी बात रखें। यह मेलजोल और प्रेमभाव जिस पत में नहीं है, उस पत का क्या मतलब ? प्रेमभाव है, तो जंगल में भी मंगल है और अगर प्रेमभाव नहीं है, तो नगर भी नरक का द्वार है।

बादशाह अकबर बीरबल की बातों को सुनकर बहुत खुश हुए और उन्हें कई सम्मानों से नवाजा।

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ही क्यों

डॉ. सरोज तिवारी
प्रधानाचार्या–सरस्वती बालिका विद्यालय

"मीठे झरने के समान, मातृभाषा के बोल
मातृभाषा में प्रेम का बहता रस अनमोल"

प्रत्येक मनुष्य जन्म से मृत्यु तक अपने विचारों भावों एवं संवेदनाओं का संप्रेषण मातृभाषा के माध्यम से करता है। महात्मा गांधी के अनुसार ''मनुष्य के मानसिक विकास के लिए मातृभाषा उतनी ही आवश्यक है, जितनी बालक के विकास में माँ का दूध। बालक जीवन का प्रथम पाठ, अपनी माँ से ही सीखता है। अंतः मातृभाषा के अतिरिक्त किसी दूसरी भाषा को लादना मैं मातृभूमि के विरुद्ध पाप समझता हूँ।''

मातृभाषा में ही हमारी संस्कृति हमारी, अदिम परम्परा, हमारा इतिहास सब कुछ निहित है, उसी के माध्यम से हम अपने क्षेत्र, धर्म एवं लोकजीवन से जुड़ते हैं। मातृभाषा में हम अपनी नैसर्गिक संस्कारों, अनुभवों एवं विचारों को मूर्त रुप प्रदान करते हैं। माता और मातृभूमि की महिमा हमारे शास्त्रों में वार्णत है। ब्रह्मवैवर्त पुराण में माँ की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए कहा गया है–

''यस्य गृहे माता नास्ति,
गृहिणी वा सुशासिता।
अरण्यं तेन गन्तव्यं
यथारण्यम तथा गृहम।।''

अंतः माँ परिवार की आधारशिला है। संस्कार, जीवन दर्शन रीति रिवाज परम्परा एवं अभिव्यक्ति का प्रारम्भ माँ की गोद से होता है। संस्कारों का बीजारोपण गर्भस्थ शिशु के अन्दर 3 माह की आयु से प्रारम्भ हो जाता है, इसका प्रमाण अभिमन्यु का उदाहरण है। विज्ञान ने भी इस तथ्य पर अपनी स्वीकृति प्रदान की है। माता के संस्कार एवं पर्यावरण का बालक के नैसर्गिक विकास में अप्रिम योगदान है तो यह स्वतः सिद्ध हो जाता है कि मातृभाषा में बालक की ज्ञानेन्द्रियाँ सर्वाधिक क्रियाशील होगी।

आज हम जब शिक्षा के माध्यम की बात करते है तो सर्वप्रथम विचार–विनिमय का सर्वश्रेष्ठ साधन मातृभाषा स्वतः सिद्ध हो जाता है। आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लागू होने के बाद से मातृभाषा के शिक्षण की स्वीकार्यता को संवैधानिक मान्यता प्राप्त हो चुकी है। शिक्षा नीति के क्रियान्वयन मातृभाषा की अनिवार्यता सुनिश्चित करना आवश्यक हो गया है। बालक माँ की गोद से संवेदनाओं को लेकर परिवार तथा विद्यालय में पदार्पण करता है। विद्यालय शिक्षा का मन्दिर होने के साथ– साथ बालक के सामाजिकरण का प्रथम स्थान है। यहाँ आकर वह अपनी भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करता है। अंतः उसकी अभिव्यक्ति जब मातृभाषा में होती है वह वाह्य वातावरण में सहज एवं सरल महसूस करता है। उसकी जन्मजात शक्तियाँ एवं अन्तर्निहित गुण स्वतः प्रकटीकृत होते है। स्वामी विवेकानन्द जी ने शिक्षा के सम्बन्ध में कहा है ''बालक की अन्तर्निहित शक्तियों का वाह्य प्रकटीकरण ही शिक्षा है।''

किसी भी राज्य, राष्ट्र को विश्वपटल पर प्रतिष्ठित करने का जरिया उसकी मातृभाषा होती है। उसकी संस्कृति, शिक्षा दर्शन, ज्ञान–विज्ञान आदि को सम्मान उसकी मातृभाषा से ही प्राप्त होता है।

अभी तक हम मैकाले की शिक्षा पद्धति से प्रभावित होकर अपनी भाषा को गौड़ स्थान तथा पाश्चात्य भाषा को महिमामंडित करने मे लगे थे। परन्तु वर्तमान समय सांस्कृतिक पुर्नजागरण का युग है। आज हमारा शीर्ष नेतृत्व अपनी मातृभाषा के माध्यम से अपने ज्ञान–विज्ञान, दर्शन, आध्यात्म सांस्कृतिक उपलब्धियों को विश्व पटल पर प्रतिस्थापित कर सम्पूर्ण विश्व में अपनी अस्मिता का डंका बजा रहा है वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्वयन से गुलामी के समय से थोपी गई आंग्लभाषा को भी शिक्षा के माध्यम की अनिवार्यता से मुक्ति प्राप्त हो गई है। ''शहीदे आजम'' भगत सिंह ने कहा था ''यदि हमारी मातृभाषा आजाद हो गई तो भारत बहुत दिनों तक गुलाम नहीं रह सकेगा। संस्कृत में एक श्लोक है

"मातृभाषा परित्यज्य येऽन्यभाषामुपासते,
तत्र यान्ति हि ते यत्र सूर्यो न भासते ।''

अर्थात जो अपनी भाषा को त्याग कर अन्य भाषा को अंगीकार करते है, वे वे अन्धकार के गर्त में पहुंच जाते है। उन्हें सूर्य का प्रकाश भी प्रकाशित नहीं कर पाता। भारत एक बहुभाषी देश है। हर क्षेत्र प्रान्त की अपनी मातृभाषा होती है। अपनी भाषा में विचार–संस्कार विज्ञान आध्यात्म आदि का संपोषण मातृभाषा करती है। मातृभाषा में संवाद के लिए किसी व्याकरण का जानने की आवश्यकता नहीं है। मातृभाषा के माध्यम से हमारी सांस्कृतिक सम्पदा एवं परम्परागत ज्ञान को सहेजा जा सकता है तथा अपनी संवेदनाओं का पोषण प्रदान किया जा सकता है। आज भारत अपनी शिक्षा नीति में संशोधन कर अपनी भाषा को व्यवहार रूप में परिणित करने का जो अभिनव प्रयोग किया है, इससे जिस परिवर्तन का प्रारम्भ हुआ है उसकी फसल एक नयी युवा पीढ़ी के रूप में 2030 से हमें प्राप्त होगी जिन्हे अपनी अस्मिता का बोध होगा, अपने गौरवशाली अतीत का भान होगा और जो मातृभाषा से संपृक्त होकर अपने राष्ट्र के विकास में अपना योगदान देने के लिए तत्पर होगी। आज हमारा दायित्व यह है कि हम मातृभाषा में होने वाले अभिनव प्रयोगो को खुले मन एवं उदार हृदय से स्वीकार करें तथा शब्द निर्माण में योगदान के सहभागी बने तथा भारतेन्दु हरिश्चन्द्र जी की उक्ति को चरितार्थ करें–

''निज भाषा उन्नति अहै
सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटे न हिय को सूल।।''

शैक्षणिक नेतृत्व प्रदान करना एक प्रधानाचार्य की प्रमुख विशेषता है।
(Pedagogical leadership is the first quality of a principal)

कमल कुमार (संयोजक)
भारतीय शिक्षा परिषद प0उ0प्र0

शिक्षा के बदलते रूवरूप को ध्यान में रखते हुए विद्यालयों में पठन–पाठन का कार्य उसके अनुरूप क्रियान्वित करने के लिए एक अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि विद्यालय में हर स्तर पर नियुक्त व्यक्ति के कर्तव्यों तथा उसके कार्यों को पूर्ण रूप से समझा जाये। वैसे तो विद्यालय में कार्यरत प्रत्येक व्यक्ति का अपना महत्व होता है परन्तु विद्यालय का का मुख्य उद्देश्य शिक्षा प्रदान करना होता है। अतः शिक्षक तथा प्रधान शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

अध्यापक की गलती माफ नहीं की जा सकती (The mistake done by a teacher can not befor given) – डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वितीय राष्ट्रपति एक अद्भुत शिक्षाविद् ने स्पष्ट कहा है कि यदि कोई वकील गलती करता है तो उसकी गलती, गलती नहीं मानी जाती क्योंकि वह फाइलों में दब जाती है। यदि कोई इंजीनियर गलती करता है तो उसकी गलती दीवार में लगी ईंट के पीछे छिप जाती है, यदि कोई चिकित्सक गलती करता है तो उसकी गलती कब्रिस्तान में दफन या शमशान में शमन हो जाती है और ये गलतियां, गलतिया नहीं मानी जाती हैं। यदि कोई शिक्षक गलती करता है तो वास्तव में वह गलती है। (वह भी बड़ी गलती) क्योंकि एक शिक्षक की गलती सामाजिक जीवन में झलकती है और राष्ट्रीय जीवन में परिलक्षित होती है, जिसे माफ नहीं किया जा सकता है। An ordinary teacher teach the topic to the students. A good teacher explain the topic for the students in the class- A superior teacher demonstrates the students when greatest teacher inspire for the students.

विद्यालय में सीखने का वातावरण पैदा करने में प्रधानाचार्य की भूमिका (The role of principal in creating atmosphere to teach)–

प्रधानाचार्यों को सभी विषयों का Basic होना आवश्यक है। प्रधानाचार्य शिक्षकों का मार्गदर्शक तथा पथ प्रदर्शक होता है, जो विद्यार्थियों को हर प्रकार से शिक्षा प्रदान कर उन्हें समाज में रहने योग्य नागरिक के रूप में खड़ा करने का प्रयास करता है। प्रधानाचार्य विद्यालय का प्रधान शिक्षक होता है। प्रधान होने के कारण उसका कार्य–दायित्व थोड़ा बढ़ जाता है। एक श्रेष्ठ शिक्षक के दायित्व का निर्वहन तो उसे करना ही होता है उसके साथ–साथ शिक्षकों का दिशा–निर्देशन कर एनर्जेटिक बनाये रखने के लिए नित नूतन प्रयोग करता रहता है। यदि शिक्षक का कार्य शिक्षा प्रदान करना है तो प्रधानाचार्य का दायित्व व कर्तव्य बनता है कि वह विद्यालय में ऐसा वातावरण बनाये जिससे शिक्षण कार्य सरलता, सहजता, कुशलता व सफलता के साथ निर्विघ्न चलता रहे।

(छात्र हृदय में जिज्ञासा कैसे पैदा की जाये) How to develope the curiosity in the heart of students- शिक्षक कभी साधारण नहीं होता है यदि शिक्षक साधारण हो तो वह बालकों को विशेष दक्षता वाले नहीं बना सकता है। एक सफल प्रधानाचार्य समय के साथ अपनी परिस्थितियों के

अनुरूप बदलने का प्रयास करें। प्रधान शिक्षक बालकों की भावनाओं को समझने वाला होना चाहिए। जिस विषय को वह छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करता है, उसमें उसकी दक्षता अति आवश्यक हो, भले ही उसके लिए उसे अलग से प्रयास, परिश्रम व मेहनत ही क्यों न करनी पड़े। बालक की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला शिक्षक बनना चाहिए। जिज्ञासा उत्सुकता पैदा करने वाला शिक्षक बनना चाहिए।

जिज्ञासा और उत्सुकता को Curiosity कहते है। इसके अभाव में छात्र सदा खोये खोये रहते हैं।

जो भी शिक्षक छात्र हृदय में जिज्ञासा पैदा कर पाते है,
ऐसे शिक्षक इस समाज में सदा से पूजे जाते हैं।
अब भी समय नहीं बीता है भूलों पर पछताने को,
छात्रों के हृदय में जिज्ञासा भाव जगाने को।
जिस दिन छात्रों के हृदय में जिज्ञासा भाव भरोगे तुम। उस दिन 50 छात्रों के दिल पर राज करोगे तुम ।।

प्रधानाचार्य कुशल नियोजनकर्ता होना चाहिए (The principal should be a good planner) प्रधानाचार्य को एक अच्छा संचालक होना चाहिए। अच्छा संचालक होने के लिए एक कुशल नियोजक बनना आवश्यक है। नियोजन संस्थान के संचालन का अभिन्न अंग है। बिना उचित नियोजन के कुशल संचालन की बात व्यर्थ है। नियोजन के अन्तर्गत प्रधानाचार्य के निम्नलिखित उत्तरदायित्व होते है।

- प्रवेश सम्बन्धित नियमावली एवं प्रवेश प्रक्रिया की रूपरेखा तैयार करना।
- विद्यालय की आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम निर्धारण तथा उसके आधार पर पुस्तकों का चयन करना। विद्यालय में खेलकूद तथा पाठ्येत्तर क्रिया / गतिविधियों का आयोजन एवं संचालन करना।
- शिक्षकों के माध्यम से उन्हें विश्वास में लेकर कार्य विभाजन करना।
- पाठ्यक्रम के अनुरूप सभी कक्षाओं में शिक्षण कार्य प्रभावी रूप से सम्पन्न हो इसका नियोजन करना।
- परीक्षा एवं मूल्यांकन हेतु समय सारिणी का नियोजन करना।
- विद्यालय की शैक्षिक एवं अन्य गतिविधियों को समुचित एवं सुनियोजित रूप से पूर्ण कराने हेतु वार्षिक कलेन्डर तैयार करना।
- विद्यालय का गौरव जिन छात्रों से है, उन पर हमेशा प्रधानाचार्य की नजर रहे तथा नियमित उत्कृष्टता के लिए प्रेरणा पुंज बने रहना आवश्यक है।

पर्यवेक्षक के रूप में प्रधानाचार्य की पृष्ठभूमि (The background of the principal as a supervisor) – एक प्रधानाचार्य को संचालक व कुशल नियोजक के साथ–साथ पर्यवेक्षण का ज्ञान होना भी आवश्यक है। किसी भी संस्था के सफल संचालन के लिए जितना जरूरी अनेक योजनाओं को नियोजित रूप से तैयार करना है। उतना ही आवश्यक उन योजनाओं के क्रियान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए समय–समय पर पर्यवेक्षण करना आवश्यक होता है। पर्यवेक्षक के रूप में प्रधानाचार्य के निम्नलिखित कार्य होते हैं–

- विद्यालय में हो रहे शिक्षण कार्य का पर्यवेक्षण करना।
- समय सारिणी के अनुसार कक्षाओं का संचालन हो रहा है या नहीं इसकी जानकारी रखना।
- शिक्षकों की त्रुटियों को मित्रवत अथवा बड़े भाई के नाते दूर करने का सार्थक प्रयास करना। शिक्षकों की समस्याओं का समाधान करना तथा शिक्षण सामग्री उपयुक्त मात्रा में प्रत्येक कक्षा एवं विषय के लिए उपलब्ध कराना।

● शिक्षकों के कार्य की गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर उन्हें समुचित मात्रा में Appriciate करते हुए परामर्श एवं मार्गदर्शन देना। उक्त सभी प्रधानाचार्य की जिम्मेदारी है।

प्रतिस्पर्धा के छात्रों को कैसे प्रेरित किया जाये (How to inspire the competitive students)– प्रधानाचार्य का कार्य केवल शिक्षण विधिवत हो यहां तक ही सीमित नहीं होता बल्कि उनको कार्यालय सम्बन्धी कार्यों का भी पर्यवेक्षण करना होता है। कार्यालय के शैक्षिक, आर्थिक अभिलेखों के साथ–साथ छात्र लेखा, अध्यापक लेखा, प्रबंध समिति अभिलेख तथा अन्य प्रशासनिक अभिलेखों पर भी नजर रखना, उनकी देख–रेख तथा उचित रखरखाव के साथ अपडेट रखना आवश्यक होता है। इसी के साथ खेलकूद, विज्ञान एवं गणित मेला, संस्कृति महोत्सव आदि कार्यक्रमों के प्रति छात्र व शिक्षकों की रूचि जाग्रत कर तैयारी के साथ परिणामकारी प्रतिभाग कराना। कहां जाना, कैसे जाना, कितना समय, संरक्षक के रूप में किसे भेजना ? बहिनों के साथ जिदपूर्वक आचार्या दीदी को ही भेजना। उक्त कार्यक्रम के दौरान कहीं घूमना, दर्शन करने जाना, गंगा स्नान के लिए ले जाना आदि से परहेज करें। कार्यक्रम समाप्ति के बाद बच्चे शीघ्रातिशीघ्र अपने माता–पिता की गोद में पहुंच जायें। इस सबकी चिन्ता करना प्रधानाचार्य का नैतिक दायित्व बनता है। हर चार घण्टे की अपडेट लेते रहें। परिणाम चाहे हो हमेशा सकारात्मक बनकर उत्साहित करते रहें।

प्रधानाचार्य बॉस नहीं, लीडर होता है (A principal is not boss but a leader)– यह वह कर्तव्य है जो प्रधानाचार्य के कार्य का मुख्य एवं अभिन्न अंग है। प्रधानाचार्य रूपी यह संज्ञा उसे स्वतः ही एक मुखिया या लीडर की भूमिका में लाकर खड़ा कर देती है। प्रधानाचार्य न सिर्फ शिक्षकों का है बल्कि वह पूरे शिक्षण संस्थान का लीडर होता है। विद्यालय से सम्बन्धित प्रत्येक गतिविधि चाहे वह शिक्षण से सम्बन्धित हो या अन्य किसी भी प्रकार की पाठ्य सहभागी गतिविधि हो दोनों ही स्थिति में नेतृत्व करना प्रधानाचार्य का कर्तव्य ही नहीं बल्कि नैतिक दायित्व भी है। बॉस हमेशा आदेश देता है "Go there and finish the work with in two hour-" जबकि लीडर हमेशा कहता है – Please come with me and we will finish the work with in two hour- किसी कार्य को पूरा करना व करा लेना उसके व्यवहार, कार्य कुशलता, क्षमता एवं योग्यता पर निर्भर करता है।

विद्यालय में घटने वाली प्रत्येक घटना के लिए मैं जिम्मेदार हूँ (I am responsible for every incident occurring in the school)– विद्यालय में उचित शिक्षण का वातावरण पैदा करना प्रधानाचार्य का प्रमुख दायित्व है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उचित अनुशासन की आवश्यकता होती है। इसके लिए वह कभी समझौते की, तो कभी दण्डात्मक नीति अपनाता है। एक प्रधानाचार्य ने अपनी कुर्सी के पीछे दीवार पर यह वाक्य लिखवा रखा है कि 'विद्यालय में घटने वाली प्रत्येक (अच्छी–बुरी) घटना के लिए मैं जिम्मेदार हूँ। आज कल देखने में आता है कि कोई घटना घट जाये उसके लिए कोई भी अपनी जिम्मेदारी नहीं मानता है। सहजता के साथ गलती स्वीकार कर लेने में कोई छोटा नहीं हो जाता बल्कि भविष्य में दुर्घटना न हो इसके लिए सजग व सचेत हो जाता है। कनकलता दीदी ने कांच का गिलास पानी पीकर कुर्सी के बराबर में रख दिया। अचानक से शुभांगी दीदी के पैर की ठोकर लगी, गिलास गिरा और टूट गया। कनकलता दीदी चिल्लाकर बोली देखकर

नहीं चल सकती क्या ? बात बढ़ती देख किरनवती मैया दौड़कर आयी और बोली इसमें आप दोनों की कोई गलती नहीं है। गलती मेरी है, मुझे गिलास तुरन्त उठाकर ले जाना चाहिए था। गलती स्वीकार करते ही बड़ा विवाद होने से बच गया। इसलिए अच्छा श्रेष्ठ व सफल प्रधानाचार्य विद्यालय की बड़ी घटना–दुर्घटना के लिए जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता है।

प्रधानाचार्य द्वारा बोधगम्यता कैसे विकसित की जाये (How to maintain the bodhgamyata by the principal)– प्रधानाचार्य को अपने विद्यालय में निम्न छः कार्यक्रम अनिवार्यतः क्रिया रूप में लाने चाहिए और परिणाम के साक्ष्य एकत्रित कर संग्रहीत करें –

- दैनिक वन्दना सभा– शिक्षक क्रमशः किसी पूर्व निर्धारित विषय पर बोलें (बोधकथा नहीं) विषय क्या हो विचार करना चाहिए यथा ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरण, स्वच्छता, स्वदेशी, मातृभूमि, जल संरक्षण, हिन्दी की महत्ता, ओजोन पर्त, राष्ट्रीयता, हिन्दुत्व, संस्कृति, संवेदनशीलता आदि मिनट बुक तैयार करें।
- साप्ताहिक आचार्य बैठक– वन्दना, प्रातः स्मरण, गायत्री मंत्र, वन्दे मातरम, विद्या भारती का लक्ष्य, एकता मंत्र, चौपाई, सुभाषित, गीत, सुलेख, उच्चारण, व्याकरण आदि की आगामी योजना बनाना 20 मिनट का समय आचार्य विकास हेतु सुरक्षित रखना, शिक्षण सम्बन्धी Tips देना।
- नैपुण्य वर्ग– तीन सत्र हो वैचारिक सत्र, विषयगत सत्र तथा शैक्षणिक कौशल के विकास हेतु चर्चात्मक विशेषज्ञों द्वारा T.L.M. सहित परिणामकारी हो।
- कार्यक्रमों की मिनट बुक लिखी जाये– किस कार्यक्रम में कौन Resorce person उपस्थित हुआ, क्या बोला और प्रस्तुतिकरण कैसा रहा।
- प्रधानाचार्य द्वारा कक्षा कक्ष में 30 मिनट शिक्षक के विषय का अवलोकन करना। पढ़ाने की शैली प्रस्तुतिकरण, अनुशासन, प्रश्नोत्तर कौशल, छात्र सहभागिता की मिनट बुक तैयार करें।
- आदर्श पाठयोजना का प्रस्तुतिकरण किसी Expert द्वारा हो क्रियाशोध का विषय हर शिक्षक को देना पूर्ति हेतु Time bound करना।

समय–समय पर विद्यालय का आडिट करवाना भी प्रधानाचार्य के कर्तव्यों के अन्तर्गत आता है। बोर्ड तथा प्रबन्ध समिति के प्रति भी जबाब देही प्रधानाचार्य की होती है। प्रधानाचार्य को एक प्रभावी व्यक्ति का स्थायी होना चाहिए। प्रधानाचार्य नेतृत्व का धनी, प्रखर वक्ता, समझदारी, जुनूनी, सकारात्मक सोच, उदार हृदयी, निर्णायक भूमिका, दूरगामी सोच रखने वाला। Collaborative, Creative, Communicatar, curiositor बने रहने वाला व्यक्तित्व Pedagogical leader की भूमिका के साथ विद्यालयों को उत्कृष्टता पर ले जाने में सक्षम हो।

बालिका शिक्षा चिंतन अनुचिंतन

सुश्री रेखा चुड़ासमा
बालिका शिक्षा, संयोजक विद्याभारती

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में छात्र–छात्राओं की शिक्षा एवं पाठ्यक्रमों में समानता होने से बालिकाओं में नैसर्गिक, मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक स्त्रियोचित गुणों का विकास नहीं हो पाता है, जिसके कारण आज का पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृश्य वितरीत देखने को मिलता है। आज की बालिका भविष्य की नारी है। वह परिवार, समाज और दोष का नेतृत्व अपने व्यक्तित्व से कर सके इस प्रकार के पाठ्यक्रमों की उसे आवश्यकता है। परिवार भावना, परिवार जीवन और परिवार व्यवस्था का मुख्य आधार गृहिणी है। आज संदर्भ में परिवार के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है। संस्कार–पंरपरा, कुल–परंपरा एवं संस्कृति–परंपरा परिवार के माध्यम से हस्तांतरित होती है, उसमें महिला का ही महत्वपूर्ण योगदान रहता है।

स्त्री–पुरुष समानता, स्त्री मुक्ति, स्त्री सशक्तीकरण आदि शब्दों की अवधारणा से बालिका विकास के प्रति दृष्टिकोण में बदलाव हुर है। सिर्फ कैरियर आधारित, अर्थ केन्द्रित शिक्षा से भारतीय नारी के वास्तविक तथा श्रद्धास्पद स्वरूप का बोध होन में बाधा आ रही है जीवन की चुनौतियों एवं प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी सुरक्षा करने की क्षमता का विकास करने की व्यवस्था आज कम ही दिखा देती है। परिवार के प्रति बालिका का कर्तव्य बोध कम होता दिख रहा है।

भारत के इतिहास की प्रेरक महिलाओं का परिचय एवं प्रेरणा, धर्म एवं संस्कृति का सही ज्ञान देने वाली शिक्षा का पाठ्यक्रमों में अभा दिख रहा है। जो वर्तमान समय में बालिका को विशेष शिक्षा के माध्यम से होना चाहिए। वर्तमान भारत को वैचारिक एवं व्यावहारि दृष्टि से मजबूत बनाये ऐसी शिक्षा की आज आवश्यकता है।

शिक्षाविदों के विचार बालिका शिक्षा के परिपेक्ष्य में -

भारतीय शिक्षाविद श्री लज्जाराम तोमर का कथन है हमें यह सत्य स्वीकार करना होगा कि विज्ञान और समाज चाहे जितने उन्नत है जायें और सामाजिक दृष्टि से स्त्रियों और पुरूषों के व्यवहार क्षेत्र तथा कार्यक्षेत्र में चाहे जितनी समानता आ जाए, किंतु पुरुषों औ स्त्रियों की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं और उनकी पूर्ति के साधनों में अवश्य अंतर रहेगा। यह अंतर कुछ तो उनकी नैसर्गिक भिन्नत् के कारण और कुछ उनकी शारीरिक भिन्नता के कारण आवश्यकता है। सामाजिक समानता का अर्थ यह नहीं है कि पुरूष और स्त्री दोनों की प्रकृति एक हो जाए। यह संभव नहीं।''

स्त्री की प्रकृतिजन्य विशेषताओं को ध्यान में रखकर उनके विकास की सुव्यवस्था शिक्षा क्षेत्र में अलग से करना पर आवश्यक है एक स्त्री की माता, गृहिणी, पुत्री, भगिनी, पत्नी आदि सभी संबंधों का निर्वाह परिवार में करना होता है। इसलिये स्त्रियों की मूलभूर मनोवैज्ञानिक और भावात्मक विशेषताओं, सौंदर्यात्मक वृत्ति, मातृत्वभाव एवं गृहिणी के रूप में उसके उत्तरदायित्व आदि का ध्यान रखर हुए उसकी शक्तियों के विकास के अनुकूल उनकी शिक्षा के पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

स्त्री स्वरूप, राष्ट्रहित समर्पित गृहिणी, माँ, श्रेष्ठ नागरिक की भूमिका निभाने वाली स्त्री का निर्माण करने वाले पाठ्यक्रम व निर्माण की आवश्यकता प्रतीत होती है।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने विभिन्न पाठ्यक्रमों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा था प्रकृति और ईश्वर में मानवजाति को स्थिर बनाये रखने का भार स्त्री पर रखा है और मनुष्य का सृजन पुरूष नहीं अपितु स्त्रियाँ ही कर सकती है। इस गौरवपूर्ण तथा विशिष्ट दायित्व को स्त्रियों और समाज के समक्ष लाना चाहिये और चाहे जो भी शिक्षा पद्धति हो, उसमें इसकी गरिमा य अनिवार्यता को ध्यान में रखना चाहिए।''

कोठारी आयोग ने कहा है ''शिक्षा के द्वारा ही बालिकाओं में सामाजिक, राष्ट्रीयभाव निर्माण करना है। नैतिक आध्यात्मिक भाव संतुष्ट करना, सहनशील, सार्वजनिक हित का ध्यान, स्वाशन, आत्म साक्षात्कार, नेतृत्वशक्ति का विकास, वैज्ञानिक मस्तिष्क का विकास, सामाजिक कुप्रथाओं का प्रतिकार करने की क्षमता का निर्माण करना है।''

महात्मा गाँधी जीने सत्य के प्रयोग पुस्तक में लिखा है ''जग के आधार रूप में पुरूष एवं स्त्री समान है। यह भी बिल्कुल सत्य है कि शारीरिक बनावट में दोनों में भेद है। पुरूषों एवं स्त्रियों की शिक्षा में उसी प्रकार का अंतर किया जाना आवश्यक है जैसा कि स्वयं प्रकृति ने उनसे किया है।''

महात्मा गाँधी जी का शिक्षा चिंतन है ''प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर तो बालिकाओं के लिए वही पाठ्यक्रम हो सकता है जो बालकों के लिये हो, परंतु माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक, उच्च शिक्षा के स्तरों पर उनमें स्त्रियों के कार्यक्षेत्र की दृष्टि से आवश्यक परिवर्तन किया जाना चाहिए। इस प्रकार की शिक्षा से दीक्षित कन्या अपने परिवार, समाज तथा देश के सामाजिक स्तर को ऊँचा उठाने में उपयोगी सिद्ध होगी।''

हमारे घर में बालिकायें अपनी माँ, दादी, नानी, बुआ से परिवार भावना, परिवार व्यवस्था, सामाजिक नीति–रीति, गृह प्रबंधन, मनोविज्ञान, भारतीय तत्वज्ञान तथा विविध कला कौशल घर में ही अनुकरण करके सीखती थी। वर्तमान समय की परिस्थितियों और परिवार व्यवस्था में परिवर्तन होने से एवं विद्यालय परिवार को बालिका शिक्षा पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन का संकल्प करना होगा। बालिका शिक्षा के आयाम को महत्व देकर सामाजिक प्रयोगों को परिवार शिक्षा एवं समाज प्रबोधन की दृष्टि लानी होगी। विद्यालय को ही बालिका शिक्षा का केन्द्र बनाना होगा जो पहले परिवार में था।

उपर्युक्त शिक्षाविदों के कथन से बालिका शिक्षा का महत्व स्पष्ट होता है। इसलिए नैसर्गिक गुणों की बालिका की विदेशी शिक्षा का विचार विद्याभारती ने किया है। विद्यालयों में विद्यार्थियों के साथ सह–पाठ्य क्रियाकलापों के माध्यम से पाठ्येत्तर क्रियाकलाप से एवं नैमित्तिक, प्रासंगिक कार्यक्रमों के माध्यम से और परिवार में किए जाने वाले क्रियाकलाप बालिका शिक्षा का क्रियान्वयन विद्याभारती के बालिका विद्यालयों एवं सह–शिक्षा विद्यालयों में किए जाने का आग्रह है। बालिका शिक्षा में परिवार के साथ संवाद, परिवार प्रबोधन एवं समाज जागरण के विषयों पर विचारगोष्ठी, चिंतन होता है। इस दृष्टि से बालिका को निम्नलिखित कार्य सीखने की आवैयकता है।

(अ) घर के छोटे मोटे काम–कुछ काम ऐसे होते हैं जो घर में किये जाते हैं और करने ही चाहिए। इन कामों की सूची इस प्रकार है–

1. घर की स्वच्छता करना, व्यवस्था करना।

2. कपड़े धोना, बर्तन साफ करना।

3. भोजन पकाना और परोसना।

4. देव पूजा, अतिथि सत्कार एवं अन्य कुलाचार एवं कुल धर्मों का पालन करना।

5. घर सजाना। घर का संस्कारक्षम वातावरण निर्माण करना।

6. बड़ों की, रूग्णों की, बच्चों की, अतिथियों की परिचर्या करना।

7. शिशु संगोपन एवं शिशु संस्कार करना।

8. गृहस्थाश्रम के सारे सामाजिक कर्तव्य समझना।

(ब) परिवार भावना, परिवार जीवन एवं परिवार व्यवस्था–

1. परिवार का केन्द्र बिंदु माँ, गृहिणी का उत्तरदायित्व को समझना।

2. परिवार में समन्वय, समायोजन और सबके साथ मातृवत व्यवहार सीखना।

3. परिवार का महत्व समझना।

4. परिवार परंपरा को नई पीढ़ी को हस्तांतरित करने का की प्रक्रिया समझना।

5. परिवार की जीवनशैली में भारतीयता का वैज्ञानिक दृष्टिकोण सीखना।

(क) संस्कृति के संस्कार :–

1. जीवन का लक्ष्य निर्धारित करना।

2. दृष्टि और सुसंस्कृत पद्धति से व्यवहार करना।

3. संयम, अनुशासन, परिश्रम, आज्ञापालन, सेवा के भाव।

4. उत्सव पर्व मनाने की सांस्कृतिक पद्धतियाँ।

6. कुल परंपरा को आगे बढ़ाने के सिद्धांत।

7. घर के सभी सदस्यों को एक सूत्र में पिरोये और उन्हें अपने–अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिये प्रेरित करना।

8. सभी के प्रति मातृवत् व्यवहार करना।

9. नारी देह में जन्म के गौरव का भाव होना।

(ड) विभिन्न व्यावहारिक कौशलः-

घर समाज की इकाई है। इस दृष्टि से घर के कुछ सामाजिक दायित्व होते हैं। ये दायित्व भी गृहिणी को निभाना आना चाहिए।

1. घर में जो आय होती है घर चलाने के लिये उसका किस प्रकार व्यय करना उसका नियोजन करना।

2. जितनी आय है उससे व्यय कम रहे यह पहला नियम है। दूसरा कर्तव्य है हमें आय और कम व्यय से जो कम सुविधाएँ प्राप्त होती हैं वह परिवार में दुख और क्लेष का कारण न बने, यह देखना। तीसरा है धन और पदार्थों की विपुलता से ही नहीं अपितु प्रेम और सौहार्द की भावना से सुख मिलता है इस संस्कार को दृढ़ करना।

3. अपनी कमाई से अनिवार्य रूप से दान करना चाहिए। यह बात घर के सभी सदस्यों को समझना चाहिए।

4. किस बात पर कितना खर्च करना, खर्च की दृष्टि से प्राथमिकताएँ तय करना, कौलतापूर्वक खरीदी कॉल सीखने की आवयकता होती है।

5. व्यय कम हो इस दृष्टि से योजना करना और आय अधिक हो इस दृष्टि से छोटे–मोटे उत्पादक उद्योग सीखना चाहिए।

6. धन कितना आवयक है और धन से अधिक आवयकता कौन–कौन सी है, यह सीखना चाहिए।

बालिका शिक्षा में कार्यक्रम एवं योजनायें:-

1. बालिका व्यक्तित्व विकास शिविर।

2. किशोरी परामर्शों एवं प्रशिक्षिण।

3. ''कन्याभारती'' की संगठनात्मक रचना।

4. किशोरावस्था में परिवर्तन एवं व्यवहार–प्रबोधन एवं परामर्श।

5. बालिका शिक्षा संबंधित विषयों की विभिन्न परिषदों की रचना करना, कायाला।

6. माता–पुत्री विचार गोष्ठी के माध्यम से चर्चा/वार्ता, जिज्ञासा समाधान।

7. परिवार के विभिन्न विषयों पर प्रबोधन/गोष्ठी।

शिक्षक पारस पत्थर है

शिक्षक पारस पत्थर है।
जो लोहे को कंचन कर दे।
भटक रहे हैं जो तम में उन
हृदयों में ज्ञान ज्योति भर दे।
गुरु वही है जो हरि को
पाने का मार्ग सुझाता है।
इसलिए गुरु हरि से भी
पहले पूजा जाता है।
बिना गुरु के ज्ञान नहीं–
होता है. बुद्धि नहीं आती है।
कितनी करो साधना लेकिन
विद्या पास नहीं आती है।
शिक्षक को पाने से पहले
शिक्षक को दो श्रद्धा सम्मान।
जीवन डोर, सौंप दो उनको
तब आ जायेगा ज्ञान।
करो गुरु को बार–बार
चरणों में प्रणाम।
तब गुरु हमको देंगे बल
बुद्धि विद्या और ज्ञान ।।

विज्ञान गीत

मानव निर्मित विविध वस्तुएँ,
जिनका हम करते उपयोग।
विकसित होती गयी सभ्यता
नूतन होते गये प्रयोग ।।
आवश्यकताएँ तीन प्रमुख है,
भोजन, वस्त्र और आवास।
इन क्षेत्रों में मानव निर्मित,
विविध वस्तुएँ विविध प्रयास ।।
खाद्य वस्तुएँ अगणित कितनी,
मानव ने तैयार किये।
सूती, ऊनी और रेशमी,
कपड़े विविध प्रकार नये ।।
आलीशान भवन है कितने,
इन्हें सजाया मानव ने।
शीशा, साबुन, डिटर्जेन्ट
इत्यादि बनाया मानव ने।।
बैंगनी, नीला, जंबुकी, हरा,
पीला, नारंगी, लाल रंग।
सातों मिल होते श्वेत धवल,
बनते प्रकाश मिल एक संग।
हम विविध प्रान्त भाषा अनेक,
भौगोलिक स्थितियों है विभिन्न।
फिर भी हम सब मिल एक राष्ट्र,
बनते भारत, हम हैं अभिन्न।

मध्य प्रदेश में विद्या भारती के पर्याय रोशनलाल जी

विद्या भारती शिक्षा क्षेत्र में दुनिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन है। इसका प्रारंभ 1952 में उ. प्र. के गोरखपुर नगर से हुआ था। सरस्वती शिशु मंदिर का प्रयोग सफल होने पर देश भर में इन विद्यालयों की मांग होने लगी। म.प्र. में इस संस्था के काम को विस्तार देने वाले श्री रोशनलाल सक्सेना का जन्म म.प्र. के ही सीधी नगर में पांच अक्तूबर, 1931 को हुआ था।

1943 में वे संघ के स्वयंसेवक बने और गटनायक, गणशिक्षक, मुख्यशिक्षक से लेकर रीवा नगर कार्यवाह तक की जिम्मेदारी संभाली। 1962, 63 तथा 1966 में उन्होंने क्रमशः तीनों संघ शिक्षा वर्ग पूर्ण किये। उन्होंने एम.एस–सी. (गणित) में संपूर्ण विश्व विद्यालय में प्रथम श्रेणी में भी प्रथम स्थान पाया था। अतः उन्हें तुरंत ही महाविद्यालय में अध्यापन कार्य मिल गया। पर उनके जीवन का उद्देश्य केवल नौकरी करना या परिवार बसाना नहीं था। अतः 1964 में उन्होंने शासकीय नौकरी छोड़ दी। रीवा के विभाग प्रचारक सुदर्शनजी को उस वर्ष प्रांत प्रचारक की जिम्मेदारी मिली थी। उनके स्थान पर रोशनलालजी को विभाग प्रचारक बनाया गया। रोशनलालजी एक मेधावी छात्र तथा योग्य अध्यापक रहे थे। उनकी इच्छा थी कि उ.प्र. की तरह म.प्र. में भी सरस्वती शिशु मंदिरों की स्थापना हो। उनके प्रयास से 12 फरवरी, 1959 (वसंत पंचमी) को रीवा की एक धर्मशाला में पहला सरस्वती शिशु मंदिर खुला। रोशनलालजी उसकी प्रबंध समिति के सचिव बनाये गये। उसकी सफलता से म.प्र. में शिशु मंदिरों का विस्तार होने लगा।

धीरे–धीरे विन्ध्य क्षेत्र में 12 विद्यालय प्रारम्भ हो गये। 1974 में इन्हें व्यवस्थित करने के लिए रोशनलालजी को सचिव बनाकर प्रांतीय समिति बनायी गयी। इस प्रकार वे शिशु मंदिर योजना के लिए ही समर्पित हो गये। बस्तर का क्षेत्र नक्सलवादियों का गढ़ है, पर वहाँ भी विद्यालय प्रारम्भ हुए। आपातकाल में दमोह पुलिस ने उन्हें पकड़ कर मीसा में बंद कर दिया। 16 जुलाई 1975 से 20 जनवरी 1977 तक वे भोपाल केन्द्रीय कारागार में रहे। आपातकाल के बाद विद्यालयों के काम को अखिल भारतीय स्वरूप दिया गया। रोशनलालजी राष्ट्रीय सचिव तथा म.प्र. विद्या भारती के संगठन मंत्री बनाये गये।

रोशनलालजी की इच्छा एक संस्कारप्रद बाल पत्रिका निकालने की थी। उनके सम्पादन में 14 नवम्बर, 1978 (बाल दिवस) पर इंदौर से मासिक पत्रिका 'देवपुत्र' प्रारम्भ हुई। 1984 में मा. रज्जू भैया तथा भाऊराव देवरस ने भोपाल के आसपास एक आवासीय विद्यालय बनाने को कहा। जो जगह मिली, वह बहुत बड़ी थी। संस्था पर पैसे भी नहीं थे। ऐसे में म.प्र. के सभी विद्यालयों से उधार लेकर जगह ले ली गयी। राज्य के भा.ज.पा. विधायकों ने भी सहयोग दिया। 1985 से वहां शारदा विहार आवासीय विद्यालय चल रहा है।

विद्या भारती के राष्ट्रीय संगठन मंत्री लज्जाराम जी की इच्छा एक योग एवं अध्यात्म केन्द्रित विद्यालय बनाने की थी । अतः अमरकंटक में वनवासी आवासीय विद्यालय शुरू किया गया। सरसंघचालक बालासाहब देवरस का पैतृक गांव म.प्र. में बालाघाट है। वहाँ भी एक सेवा न्यास तथा आवासीय विद्यालय चल रहा है। ग्रामीण तथा वनवासी विद्यालयों पर उनका विशेष जोर रहता था। वे छात्रों के साथ ही आचार्य, उनके परिवार, प्रबंध समिति के सदस्य तथा भवन निर्माण में लगे मजदूरों तक की पूरी चिंता करते थे। उनके स्वभाव में जुझारूपन के साथ ही प्रेम का सागर भी बहता था। म.प्र. में विद्या भारती की हर बड़ी योजना की नींव में वही थे।

विद्या भारती में उन पर वनवासी शिक्षा प्रमुख से लेकर राष्ट्रीय मार्गदर्शक तक की जिम्मेदारी रही। नवम्बर 2011 में सरसंघचालकजी ने इंदौर में उनका सार्वजनिक अभिनंदन किया। म. प्र. में विद्या भारती के पर्याय रोशनलालजी ने 21 अगस्त, 2018 को सुदीर्घ आयु में भोपाल में अंतिम सांस ली।

कल-कल करती सरयू धारा

डॉ. हरि प्रसाद दुबे

कल–कल करती सरयू धारा,
स्वर्ग से सुन्दर दिव्य हमारा।
गाता गुनगुन सदा किनारा,
तीर्थ अयोध्या धाम संवारा।।
धरती मनु धरोहर बहती,
संस्कृति भाव्या रचयिता
अमृत पान कराने वाली,
प्रेम वात्सल्य पिलाने वाली ।।
अंजनी नन्दान कृपा दुलारी,
रघु सगर यशस्वी न्यारी।
मानसरोवर ऋषि निखारें,
साक्षी पूर्वज मंत्र संवारें ।।
परमानन्द सौभाग्य दिलाये,
जन्म भूमि देवत्व दिखाये।
दर्शन स्नान देव हरषाये,
धन्यगोद मां सरयू पाये।।

हर बार अपनी गलती से सीखने की जरूरत नहीं है। हम दूसरों की गलतियों से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।

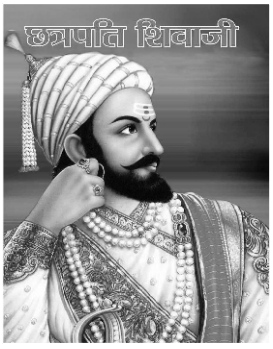

इस दुनिया में हर व्यक्ति को स्वतंत्र रहने का अधिकार है और उस अधिकार को पाने के लिए वह किसी से लड़ सकता हैद्य

बालकोना
(बुद्धि परीक्षण)

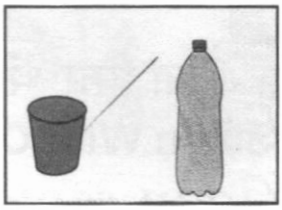

आज्ञाकारी पानी
(Obeying Water)

आवश्यक सामग्री– ढक्कन युक्त एक लीटर की बोतल, सूई, खाली बाल्टी और पानी

ऐसा करो –

1. ढक्कन के मध्य में सूई से एक महीन छिद्र बनाओ।
2. बोतल को पानी से भर दो।
3. बोतल के निचले हिस्से में भी सूई की सहायता से एक छिद्र बना लो।
4. ढक्कन से बोतल को बंद कर दो।
5. अंगुली की सहायता से ढक्कन के छिद्र को खोलो व बन्द करो, यह प्रक्रिया नियमित अंतराल पर करो।

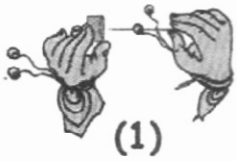

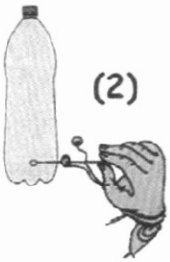

आप देखते हैं कि –

1. जब ढक्कन का छिद्र हाथ की अंगुली से बंद रहता है तो नीचे के छिद्र से पानी नहीं गिरता है।
2. जब ढक्कन के छेद से अंगुली हटाते हैं तो नीचे के छेद से पानी का प्रवाह प्रारम्भ हो जाता है।
3. इस प्रकार नीचे के छेद से पानी के प्रवाह को ढक्कन के छेद को बन्द एवं खोलकर नियंत्रित किया जा सकता है।

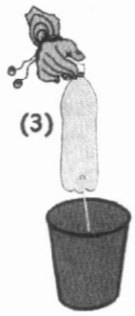

वैज्ञानिक कारण –

1. जब अंगुली से ढक्कन के छिद्र को बंद करते हैं तो वायुमंडलीय दाब पानी के सतह की बजाय अंगुली पर लगता है और पानी का प्रवाह रुक जाता है।
2. जब अंगुली को ढक्कन से हटा लिया जाता है तो वायुमंडलीय दाब पानी की सतह पर कार्य करता है। दाब में अंतर हो जाने के कारण पानी प्रवाहित होने लगता है।

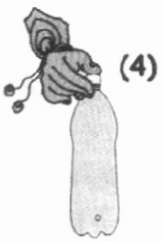

सिद्धान्त –

1. वायुमंडलीय दाब का प्रभाव
2. द्रवीय दाब का प्रभाव

गतिविधियाँ

ज्वाला देवी गंगापुरी में सम्पन्न हुआ विदाई कार्यक्रम-

प्रो. राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया) शिक्षा प्रसार समिति द्वारा संचालित ज्वाला देवी सरस्वती विद्या मंदिर इन्टर कॉलेज गंगापुरी रसूलाबाद प्रयागराज के मीडिया प्रभारी दीपक कुमार मिश्र की विज्ञप्ति के अनुसार सत्र 2023–24 को इंटरमीडिएट बोर्ड के विद्यार्थियों का आशीर्वचन समारोह आज दिनांक 16 फरवरी 2024 को विद्यालय के रज्जू भैया सभागार में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में विद्या भारती काशी प्रांत के प्रदेश निरीक्षक श्रीमान शेषधर द्विवेदी जी, अध्यक्ष के रूप में डॉ. आनन्द श्रीवास्तव जी (विद्यालय प्रबन्ध समिति के प्रबंधक) एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान मत्स्येंद्र नाथ त्रिपाठी जी (प्रधानाचार्य जयप्रकाश नारायण सर्वोदय विद्यालय खाई करछना प्रयागराज) उपस्थित रहे।

विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान युगल किशोर मिश्र ने अतिथियों का परिचय व सम्मान कराया। इस अवसर पर विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि परीक्षा को ही जीवन की अंतिम परीक्षा नहीं मान लेना चाहिए। अपने लक्ष्य को अपने सामर्थ्य के अनुसार निर्धारित कर उसे प्राप्त करने के लिए ईमानदारी पूर्वक प्रयास करना चाहिए। साथ ही परीक्षा के समय होने वाली गलतियों को कैसे दूर करें इस पर विस्तृत रूप से छात्र/छात्राओं का मार्गदर्शन किया एवं भविष्य में मजबूत कदम के साथ आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम की अगली कड़ी में एकादश के विद्यार्थियों ने अपने वरिष्ठ भैया एवं बहनों के लिए मनमोहक एवं हृदय स्पर्शी गीत, भजन एवं नृत्य प्रस्तुत किया। द्वादश के विद्यार्थियों ने विद्यालय में बिताए गए अपने पों को भावुकता पूर्ण तरीके से अपने विचारों के माध्यम से प्रस्तुत किया। भैया दामोदर शुक्ल, बहन कौशिकी श्रीवास्तव, अदिती मिश्रा, अरु मिश्रा, कीती दुबे आदि छात्रों के विचारों को सुनकर उपस्थित सभी छात्रों एवं आचार्य/आचार्या की आखें नम हो गई। बहन कीर्ती त्रिपाठी ने स्वागत गीत तथा बहन शिवानी मिश्रा ने विदाई गीत प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि जी ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि मुझे विश्वास है कि विद्या भारती के विद्यार्थी अपने मेधा शक्ति, संस्कृति संस्कार एवं चरित्र से निःसंदेह भारत माता को सिरमौर बनायेंगे। महात्मा बुद्ध जी के प्रेरणादाई प्रेरक प्रसंग को सुनाते हुह कहा कि आशा है आप भी अपने ज्ञान व संस्कार के प्रकाश से संसार को प्रकाशित करेंगे।

समरसता दिवस-

आज हमारे विद्यालय सरस्वती बालिका विद्या मन्दिर इंटर कॉलेज, सरस्वती नगर, रायबरेली में श्री रामोत्सव कार्यक्रम एवम् समरसता दिवस का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन,किया गया, उसके उपरांत वंदना संपन्न कराई गई, आदरणीय प्रधानाचार्या दीदी **'श्री मती निधि द्विवेदी जी'** द्वारा मुख्य अतिथियों का परिचय व स्वागत कराया गया व छात्राओं द्वारा स्वरूप दर्शन, रंगोली, चित्रकला एवम् भजन प्रतियोगिता में सहभागिता की गई।

इसके उपरांत मुख्य अतिथि **'श्री अमरेश बहादुर सिंह जी (विभाग संचालक)'** का

उद्‌बोधन हुआ जिसमें उन्होंने राम जन्मभूमि के आंदोलन के इतिहास एवम् **'मन्दिर यहीं बनाएंगे'** नारे के बारे में बताया , साथ ही उन्होंने प्राण प्रतिष्ठा दिवस को पर्व के रूप में मनाने का आग्रह किया।

तत् पश्चात् आदरणीय प्रबंधक **'श्री दिनेश कुमार श्रीवास्तव जी'** का उद्‌बोधन हुआ जिसमें उन्होंने भी प्राण प्रतिष्ठा दिवस को दिवाली के रूप में मनाने का आग्रह किया एवम् कक्षा 12 की छात्रा **'तान्या सोनकर'** को राम मन्दिर का मॉडल बनाने हेतु उत्साह वर्धन करते हुए पुरस्कृत किया गया।

उसके उपरांत आदरणीय प्रधानाचार्या जी ने अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की, और सहभोज हेतु सभी से आग्रह किया।

इस अवसर पर 'श्रीमती पुष्पा गुप्ता जी', 'श्री जामवंत राय जी', 'श्री देवी कुमार गुप्ता जी', 'श्रीमती गायत्री कसौंधन जी', 'श्री अमरेंद्र सिंह जी' एवम् नगर के गणमान्य व्यक्ति एवम् प्रबंध समिति के लोगों के साथ अभिभावक गण भी पूर्ण हर्ष और उत्साह के साथ उपस्थित रहे, जिससे संपूर्ण वातावरण राममय हो गया।

स्वयंसेवक ध्येय समर्पित कार्यकर्ता

डॉ. विजयपाल सिंह जी को श्रद्धांजलि -

आज प्रातः ६४ वर्ष की आयु पूर्ण कर गौलोक वासी हो गये। उनका जन्म उत्तराखण्ड की रुड़की तहसील के अन्तर्गत ग्रामीण परिवेश में हुआ था। वे बाल्यकाल से ही संघ शाखा के नियमित स्वयंसेवक थे।

शिक्षा में रुचि होने के कारण उस समय के एक वरिष्ठ प्रचारक भाऊराव देवरस के निकट सहयोगी तथा सरस्वती शिशु मन्दिर योजना के संस्थापक श्री कृष्णचन्द्र गांधी ने उन्हें १९५२ में सरस्वती शिशु मन्दिर योजना के प्रथम विद्यालय गोरखपुर में आचार्य के रूप में नियुक्त किया।

गोरखपुर के बाद अन्य स्थानों पर भी वे सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालय प्रारम्भ करने के लिए भेजे गये। वे लंबे समय तक इंटरमीडिएट कॉलेज बदायूँ में कला विषय के अध्यापक रहे। उनके अनेक विद्यार्थी कला क्षेत्र में महत्वपूर्ण पदों पर रहे।

कला में व्यंग्य व कार्टून विषय पर उनका शोध था। इसी विषय पर उनको डॉक्टरेट की उपाधि थी। वे देश के जाने माने कार्टूनिस्ट भी थे। देश की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में समाज के समसामयिक विषयों पर उनके लेख भी छपे। अनेक चित्र प्रदर्शनियों में उनकी कला को सराहा गया।

वे उन वरिष्ठ कार्यकर्ताओं में से एक थे जिन्होंने पण्डित दीनदयाल उपाध्याय को देखा, समझा, तथा उनके सानिध्य में कार्य भी किया। वे यदा कदा दीनदयाल जी के बारे में प्रेरणादायी प्रसंगों की चर्चा करते थे।

१९७५ के आपातकाल में वे अन्य कार्यकर्ताओं के साथ जेल में बंदी बनाये गये तथा उन्हें पुलिस द्वारा यातनाएँ भी दी गयीं, जिनका जिक्र आपातकाल के बाद छपी पुस्तकों में भी मिलता है।

उन्होंने फिल्म उद्योग के लिए कई स्क्रिप्ट भी लिखे, इस विषय पर फिल्म जगत के उस समय के राज कपूर जैसे कई नामी कलाकारों ने उनकी सराहना भी की।

सेवानिवृत्ति के बाद उनके मन में अपने पैतृक प्रदेश में बसने की चाह थी, इसीलिए गत ३० वर्षों से वे डोईवाला के निकट दुधली गाँव में अपने परिवार के साथ निवास कर रहे थे। यहीं कल्पतरु के नाम से अनेक सामाजिक गतिविधियों में उनकी सक्रिय सहभागिता थी। एक सामान्य, सरल

साधारण जीवन बिताते हुए सदैव वे अपनी कला की अभिव्यक्ति को समर्पित रहे।

समर्पण कार्यक्रम सम्पन्न-

दिनांकः 17 फरवरी 2024 को सरस्वती कुन्ज निराला नगर लखनऊ में सरस्वती कुंज के समस्त कार्यालयों के कर्मचारियों, अधिकारियों व समाज के प्रतिष्ठित जनों द्वारा समर्पण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता मा0 डॉ0 नरेन्द्र अग्रवाल, महानिदेशक चिकित्सा (प्रशिक्षण) उ०प्र० ने की। मुख्य अतिथि के रूप में मा0 यतीन्द्र जी अखिल भारतीय सह संगठन मंत्री विद्या–भारती ने समर्पण क्यों ? इस विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा, कि आज भी हमारे देश में कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ पर अपने ही लोगों के पास वस्त्र नहीं है। उनके बच्चों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य की कोई व्यवस्था नहीं है। वनवासी क्षेत्रों में ऐसे दुगम गाँव हैं जहाँ शिक्षा नाम की कोई चीज नहीं है। विद्याभारती द्वारा ऐसे स्थानों पर वहाँ के बच्चों की शिक्षा के लिए गाँवों में संस्कार केन्द्र व एकल विद्यालयों का कार्य विगत 45 वर्षों से चलाया जा रहा है। इस कार्य के लिए समर्पण के द्वारा प्राप्त धन ही एक साधन है। कार्यक्रम का संचालन मा० दिनेश कुमार सिंह, सचिव भारतीय शिक्षा परिषद ने किया। अतिथि परिचय मा0 उमाशंकर मिश्र सरस्वती कुंज प्रमुख ने कराया– मा0 डा0 जय प्रताप सिंह, क्षेत्रीय मंत्री विद्या भारती ने आये हुए अतिथियों व समाज के प्रतिष्ठितजनों को सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित किया।

प्रतिभा खोज परीक्षा-

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध भारतीय शिक्षा समिति उ०प्र० द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मन्दिरों एवं विद्या मन्दिरों में कक्षा पंचम एवं कक्षा अष्टम् में अध्ययनरत मेधावी छात्रों की सरस्वती प्रतिभा खोज परीक्षा दिनांक 10 व 11 फरवरी 2024 को सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सेक्टर क्यू अलीगंज, लखनऊ, सनातन धर्म सरस्वती शिशु मन्दिर मिश्राना, लखीमपुर, श्रीराम चम्पा देवी सरस्वती विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज बिसवाँ, सरस्वती शिशु विद्या मन्दिर नानकपुरा, अयोध्या एवं सरस्वती शिशु मन्दिर मालवीयनगर, गोण्डा कन्द्रों पर सम्पन्न होंगी। भारतीय शिक्षा परिषद् द्वारा संचालित इस परीक्षा में मासिक एवं अर्धवार्षिक परीक्षा में प्रत्येक विषय में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्र प्रतिभाग करते हैं। सरस्वती प्रतिभा खोज परीक्षा का उददेश्य छात्रों को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिभाग करने के लिए आत्मविश्वास जागृत कर तैयारी के लिए प्रोत्साहित करना है। इस दृष्टि से इस परीक्षा में छात्रों की शैक्षिक अभिरूचि के साथ–साथ मानसिक योग्यता, समसामयिक जानकारी तथा तर्क शक्ति के मूल्यांकन सम्बन्धित प्रश्नों का समावेश किया जाता है। इस वर्ष इस परीक्षा में अवध प्रान्त के उपरोक्त पांचों केन्द्रों पर 13 जनपदों के नगरीय विद्यालयों के कक्षा पंचम के 246 एवं कक्षा अष्टम के 370 भैया–बहन परीक्षार्थी के रूप में पंजीकृत है। प्रान्तीय स्तर पर वरीयता सूची में प्रथम तीन स्थान प्राप्त छात्रों को प्रान्त द्वारा सम्मानित किया जाता है और इन्हें आगामी तीन वर्ष तक भारतीय शिक्षा परिषद द्वारा छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है।

हमारे विविध कार्यक्रम

डाक पंजी. क्र.: **S-S-P-/LW/NP-188/2024-2026**
प्रेषण डाकघर–रेल सेवा, चारबाग, लखनऊ । प्रेषण तिथि– **5,6,7,8**

हमारे विविध कार्यक्रम

मुद्रकः प्रिन्टको प्रिन्टर्स–**22**, जगत नारायण रोड, लखनऊ । प्रकाशक : डॉ. शिवभूषण त्रिपाठी, शिशु शिक्षा प्रबन्ध समिति, निराला नगर, लखनऊ– **226020**, सम्पादक : उमाशंकर मिश्र।
प्रकाशन तिथि : **01.03.2024**